ADDITIONAL® PRACTICE

हिंदी 9

कोर्स–'ए'

mRrjekyk

DNA education
New Delhi-110002

क्षितिज : भाग 1 – गद्य खंड

अध्याय–1

दो बैलों की कथा

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) जानवरों में सबसे मूर्ख 'गधे' को समझा जाता है क्योंकि अन्य जानवर किसी न किसी प्रकार से अपने क्रोध को प्रकट करते हैं परंतु गधा ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो प्रत्येक परिस्थिति में सम रहता है तथा कभी भी असंतोष प्रकट नहीं करता।

उत्तर (ii) गाय अपने बछड़े/बछड़ी की रक्षा के लिए सिंहनी का रूप धारण कर लेती है, अत्यंत वफ़ादार होने पर भी कुत्ता कभ‌ी–कभी क्रोधित हो जाता है। जबकि गधा किसी भी विपरीत परिस्थिति में अपना आक्रोश प्रकट नहीं करता।

उत्तर (iii) असीम सहनशीलता, जो कि गधों में पाई जाती है।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) मनुष्य गधे के गुणों का अनादर करता है। वैसे तो गधे को ऋषियों–मुनियों के समकक्ष बताया गया है परंतु हम गधे का अनादर करते हैं उसे 'मूर्ख' मानते हैं। जबकि ऋषियों–मुनियों को हम हृद्य से सम्मान देते हैं।

उत्तर (ii) भारतवासियों की दुर्दशा के निम्नलिखित कारण बताए गए हैं–

(1) वे अत्यंत सीधे और सरल स्वभाव के होने के कारण किसी से लड़ाई–झगड़ा नहीं करते।
(2) वे ईंट का जवाब पत्थर से नहीं देते तथा जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं।

उत्तर (iii) ईंट का जवाब पत्थर से देने पर भारतीय 'सभ्य' कहलाने लगते।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) गधे का छोटा भाई 'बछिया के ताऊ' अर्थात बैल को कहा गया है। कुछ लोगों का मानना है कि मूर्ख प्राणियों की श्रेणी में बैल गधों की तुलना में थोड़ा कम मूर्ख है।

उत्तर (ii) गधे को मूर्खता का 'पर्याय' माना जाता है। अर्थात वह प्रत्येक परिस्थिति में सम रहता है। जबकि बैल अनेक प्रकार से अपने क्रोध और असंतोष को प्रकट करता है। इसलिए लेखक बैल को गधे की श्रेणी में नहीं रखता।

उत्तर (iii) 'बछिया का ताऊ'–बैल को कहा गया है।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) हीरा और मोती झूरी काछी के बैल थे। उनकी निम्नलिखित विशेषताएँ थीं–

(1) दोनों पछाईं जाति के थे।
(2) दोनों हृष्ट–पुष्ट थे।
(3) दोनों में भाईचारा था।
(4) दोनों मूक–भाषा में एक–दूसरे से विचार–विनिमय करते थे।

उत्तर (ii) हीरा और मोती में गुप्त शक्ति थी। वे इस शक्ति के द्‌वारा एक–दूसरे के मन के भावों को भली–भाँति समझ जाया करते थे।

उत्तर (iii) मनुष्य यह दावा करता है कि वह सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) 'गया के घर को' नया स्थान कहा गया है। वह स्थान दोनों को बेगाना–सा लग रहा था। उनका दिल बहुत भारी हो रहा था, जिसके फलस्वरूप उन्होंने वहाँ से भागने का निर्णय लिया।

उत्तर (ii) दोनों ने योजना बनाई कि जब सब लोग सो जाएँगे। तो वे वहाँ से भाग जाएँगे। रात के समय उन्होंने अपने प्रयासों से पगहे तोड़ डाले और अपने घर के लिए नौ-दो ग्यारह हो गए।

उत्तर (iii) बंधन से मुक्त होकर अपने मालिक के पास पहुँचने का भाव।

गद्यांश - 6

उत्तर (i) झूरी ने देखा कि उसके दोनों बैल चरनी पर खड़े थे। उन्हें देखकर वह अत्यंत प्रसन्न हो गया और उसने उन्हें अपने गले लगा लिया और उनके प्रति अपना प्रेम प्रकट करने लगा।

उत्तर (ii) गाँव में प्राय: ऐसी घटनाएँ होती ही रहती थी। इसलिए यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्त्वपूर्ण इसलिए थी क्योंकि इतने दिनों बाद, इतनी मुसीबत सहन करने के पश्चात् भी वह अपने घर अपने मालिक के पास पहुँच गए थे।

उत्तर (iii) दोनों बैलों को देखकर बच्चों ने उन्हें अच्छा चारा (गुड़, चोकर आदि) देने का निश्चय किया।

गद्यांश - 7

उत्तर (i) गया के घर में हीरा-मोती के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। उन्हें रूखा-सूखा चारा दिया जाता था। उस घर के मालिक की बेटी उन्हें एक-एक रोटी खिलाती थी–इससे उन्हें लगा कि अवश्य ही उस घर में किसी सज्जन का वास था।

उत्तर (ii) लड़की को दोनों बैलों से लगाव हो गया था क्योंकि दोनों कि परिस्थितियाँ एक जैसी थीं। दोनों ही प्रेम अपनत्व और लगाव से वंचित थे। उन सबके साथ बेगानों-सा व्यवहार किया जाता था।

उत्तर (iii) गया के घरवाले बैलों से अमानवीय व्यवहार करते थे जबकि वह लड़की दोनों बैलों के प्रति आत्मीयता रखती थी।

गद्यांश - 8

उत्तर (i) लड़की ने घर में हुई सलाह को सुन लिया था कि बैलों की नाकों में नथ डाली जाएगी। इसलिए उसने उन दोनों को भगाने में ही भला समझा। उसने उन्हें आज़ाद कर दिया और स्वयं की रक्षा में उसने चिल्लाना शुरू कर दिया कि दोनों बैल वहाँ से भाग रहे हैं।

उत्तर (ii) वे दोनों गया के घर से इसलिए नहीं जाना चाहते थे क्योंकि उनके वहाँ से जाने के पश्चात् उस बच्ची के साथ बुरा व्यवहार किया जाएगा उसके साथ मारपीट की जाएगी क्योंकि उस घर में वही बच्ची उनके साथ अपनत्व रखती थी।

उत्तर (iii) अपने बचाव के लिए लड़की ने ऐसा किया।

गद्यांश - 9

उत्तर (i) उन्होंने देखा कि वहाँ पर कई जानवर अधमरे से पड़े थे। कुछ जानवर तो इतने कमज़ोर हो गए थे कि खड़े होने में भी असमर्थ थे। पूरा दिन वे भूखे पड़े रहते थे। कोई उन्हें दाना-चारा-पानी नहीं देता था।

उत्तर (ii) कांजीहौस में पशुओं के साथ बहुत अमानवीय व्यवहार किया जाता था। उन्हें पूरा-पूरा दिन भूखा रखा जाता था। यहाँ तक कि उनके साथ मारपीट भी की जाती थी।

उत्तर (iii) पूरा दिन बीत जाने पर भी उन्हें चारा नहीं मिला था। इसलिए भूखे होने के कारण उन्होंने दीवार की मिट्टी चाटनी शुरू कर दी।

गद्यांश - 10

उत्तर (i) हार में चरते सभी जानवर बहुत प्रसन्न थे। कोई जानवर उछल-कूद कर रहा था तो कोई बैठा जुगाली। जबकि हीरा-मोती की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। कई दिन कांजीहौस में भूखे-प्यासे रहने के पश्चात् उनकी हालत बहुत खराब हो गई थी।

उत्तर (ii) जब दढ़ियल आदमी उन्हें अपने साथ ले जा रहा था तब वे बहुत दुखी हो रहे थे और उन्हें लग रहा था कि अब उनकी मृत्यु निश्चित है परंतु जब उन्होंने देखा कि वह रास्ता, खेत, बाग सब उनके जाने-पहचाने थे तब उनका दुख खुशी में बदल गया।

उत्तर (iii) हार में चरते चिकने, चपल जानवर उन्हें स्वार्थी नज़र आ रहे थे।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. दोनों ने गया को बहुत परेशान किया था। क्रोधवश गया ने ऐसा किया।

उत्तर 2. हीरा-मोती पछाईं नस्ल के दो बैल थे।

उत्तर 3. कांजीहौस का मालिक एक निर्दयी व्यक्ति था जो हीरा और मोती को भूखा-प्यासा रखता था।

उत्तर 4. हीरा-मोती को झूरी के थान पर खड़े देखकर बच्चे खुश हुए।

उत्तर 5. गधे को मूर्खता का पर्याय माना जाता है इसलिए बेवकूफ आदमी को गधा कहते हैं।

उत्तर 6. भारतवासी यदि ईंट का जवाब पत्थर से देना सीख लेते तो शायद वे सभ्य कहलाने लगते।

उत्तर 7. वे दोनों पछाईं जाति के हष्ट-पुष्ट बैल थे। वे काम में चौकस थे।

उत्तर 8. उन्हें अपने मालिक झूरी तथा अपने घर से बिछड़ने का बहुत दुख था।

उत्तर 9. झूरी अपने बैलों को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुआ।

उत्तर 10. जब छोटी बच्ची ने उन्हें एक-एक रोटी खिलाई तो दोनों को लगा कि वहाँ भी किसी सज्जन का वास है।

उत्तर 11. उसकी स्थिति भी उन बैलों जैसी थी। उसे उस घर में आत्मीयता और ममता नहीं मिलती थी।

उत्तर 12. उन्हें प्रतीत हो रहा था कि उस छोटी बच्ची के साथ मारपीट की जाएगी।

उत्तर 13. हीरा के बंधक होने के कारण मौका होने पर भी मोती कांजीहौस से नहीं भागा।

उत्तर 14. नीलामी में एक कसाई ने हीरा-मोती को खरीदा।

उत्तर 15. झूरी अत्यंत प्रसन्न हो उठा और उसने अपने बैलों को गले लगा लिया।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ का व्यवहार उसके प्रति अच्छा नहीं था। ठीक उसी प्रकार उन बैलों से भी सौतेला व्यवहार किया जाता था। उन तीनों की स्थिति एक जैसी थी। अत: छोटी बच्ची के मन में बैलों के प्रति प्रेम उमड़ आया।

उत्तर 2. जी हाँ यह कहानी 'आज़ादी की लड़ाई' की ओर संकेत करती है। जिस प्रकार हीरा और मोती ने आज़ादी प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयास किए और सफल हुए, ठीक उसी प्रकार आज़ादी प्राप्त करने के लिए भारतीयों ने अथक प्रयास किए।

उत्तर 3. कांजीहौस में लावारिस पशुओं को बंद किया जाता था तथा दूसरों का खेत चरने वाले जानवरों को भी बंद किया जाता था। उनके साथ मारपीट की जाती थी, उन्हें चारा भी नहीं दिया जाता था।

उत्तर 4. उन्होंने अपने अंतर्ज्ञान से जान लिया कि अवश्य ही वह कोई कसाई है, जो उनका माँस, सींग, हड्डी सब कुछ बेच देगा। अर्थात् उनकी बोटी-बोटी नोच लेगा।

उत्तर 5. मोती ने अपने प्रयासों से कांजीहौस में कैद सभी पशुओं को आज़ाद करवा दिया था। इस कार्य के बदले वह आशीर्वाद पाने की अपेक्षा कर रहा था।

उत्तर 6. हार में चरने वाले सभी जानवर चंचल, चपल और प्रसन्न थे। वे उन जानवरों से अपनी तुलना कर रहे थे और चाह रहे थे कि कोई उनकी पीड़ा को महसूस करे और उन्हें उस बधिक से आज़ाद करवाए।

उत्तर 7. सभी बालक बहुत प्रसन्न हो गए थे और उन वीर बैलों के लिए गुड़, चोकर, चारा आदि लाए थे।

उत्तर 8. उन्हें लग रहा था कि यदि उनके पास वाणी की शक्ति होती तो वे अवश्य झूरी से पूछते कि उसने उन्हें गया के साथ क्यों भेज दिया। वे तो रूखा-सूखा खाकर भी झूरी के साथ प्रसन्नता से रह सकते थे।

उत्तर 9. जब वे पहली बार गया के घर से भागकर झूरी के पास पहुँचते हैं, तब ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे स्नेह के साथ-साथ अपनी नाराज़गी भी प्रकट कर रहे थे। क्योंकि वे अपने मालिक व घर से दूर कर दिए गए थे।

उत्तर 10. उन दोनों बैलों को नियंत्रण में करने के लिए गया और उसके परिवार वाले योजना बना रहे थे कि दोनों बैलों की नाकों में नाथें डलवा दी जाएँ, जिससे वे घर से भाग न सकें।

उत्तर 11. बालिका उन दोनों बैलों के साथ गहरा लगाव रखती थी। रात को जब उन्हें देखने आई तो उसने उन दोनों की रस्सियाँ खोलकर उनकी भागने में मदद की क्योंकि वह जान गई थी कि घरवाले उन दोनों की नाकों में नथ डालने वाले हैं।

उत्तर 12. मोती के स्वभाव में उग्रता अधिक थी। वह तो घर की मालकिन को भी सींग मारने की बात करता है जबकि हीरा में अधिक सहनशीलता थी। कई ऐसे अवसर आए जब उसने धैर्य का परिचय दिया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हीरा में अधिक धैर्य था।

उत्तर 13. लेखक कहते हैं कि गधा सीधा-सादा और सहनशील प्राणी होता है, उसे कभी क्रोध नहीं आता। उसके इन्हीं गुणों के कारण लोग उसे मूर्ख कहते हैं। लेखक ने उसे नए रूप में देखा है और उसकी तुलना ऋषियों-मुनियों से की है क्योंकि उनके 'दो बैलों की कथा' पाठ से तमाम गुण उसमें पाए जाते हैं।

उत्तर 14. 'दो बैलों की कथा' पाठ से अनेक शिक्षाएँ मिलती हैं–

(i) औरत-जाति का सम्मान करना चाहिए।
(ii) अपने मालिक के प्रति कभी नमकहरामी नहीं करनी चाहिए।
(iii) विपत्ति के समय मित्र का साथ देना चाहिए।

उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न –

उत्तर 1. इस घटना के आधार पर हम कह सकते हैं कि हीरा अधिक धैर्यशाली और सहनशील था। वह जानता था कि सभी समस्याओं का हल-आवेश, आक्रोश और उग्रता नहीं होता। कभी-कभी परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं कि सब्र से काम लेना पड़ता है।

उत्तर 2. निम्न घटनाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि मोती के स्वभाव में उग्रता थी–

(i) वह घर की मालकिन पर प्रहार करना चाहता था।
(ii) गया को भी वह मारना चाहता था।
(iii) दढ़ियल आदमी को भी वह मज़ा चखाना चाहता था।

उत्तर 3. जब दोनों का सामना साँड से हुआ तो दोनों ने संगठित होकर साँड से मुकाबला करने की ठानी। जब साँड हीरा पर प्रहार करता तो मोती पीछे से प्रहार करता और जब वह मोती पर प्रहार करता तो हीरा उस पर वार करता। इस प्रकार दोनों ने मिलकर साँड को हरा दिया।

उत्तर 4. इसका प्रमाण हमें निम्न घटनाओं के आधार पर मिलता है–

(i) छोटी बच्ची द्वारा उनके बंधन खोले जाने पर वे वहाँ से भागना नहीं चाहते थे क्योंकि वे जानते थे कि उस बच्ची की जान आफत में आ जाएगी।
(ii) वे दोनों जानते थे कि कांजीहौस से वे भाग नहीं पाएँगे परंतु मोती ने फिर भी दीवार तोड़ दी ताकि बाकी जानवर वहाँ से आज़ाद हो सकें।

उत्तर 5. वे दोनों अपने मालिक के प्रति आत्मीयता का भाव रखते थे। जब झूरी ने बैल गया को दे दिए तो, उनके मन में अपने मालिक के प्रति नाराज़गी के भाव थे। जब वे झूरी से मिलते हैं तो उसके प्रति विद्रोहमय स्नेह प्रकट करते हैं।

उत्तर 6. लेखक के अनुसार सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं हैं।
इसके लिए लेखक ने निम्नलिखित उदाहरण दिए हैं–

(i) भारतवासियों की अफ्रीका में बहुत दुर्दशा हो रही है।
(ii) उन्हें अमरिका जाने की अनुमति नहीं हैं।
(iii) जी-तोड़ परिश्रम करने पर भी उन्हें सम्मान नहीं मिलता।
(iv) ईंट का जवाब पत्थर से न दे पाने के कारण वे असभ्य कहलाते हैं।

उत्तर 7. जब पहली बार बैल उसके मायके से आए थे तो वह जल-भुन उठी थी। वह उन्हें कामचोर ठहरा रही थी तथा उसने उन्हें

रूखा-सूखा चारा देने का आदेश दिया था। दूसरी बार वे दोनों दढ़ियल से पीछा छुड़ाकर अपनी जान बचाकर अपने घर पहुँचे थे। अपने बैलों को देखकर वह अत्यंत प्रसन्न हो उठी थी। उसे लग रहा था कि दोनों ने बुद्धिमता से अपनी जान बचा ली थी।

उत्तर 8. निम्न घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी–

(i) दोनों ने मिलकर साँड का सामना किया।

(ii) विपत्ति के समय दोनों ने एक-दूसरे का साथ निभाया।

(iii) दोनों नाँद में एक साथ मुँह डालते और निकालते थे।

(iv) दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर प्रेम प्रकट करते थे।

उत्तर 9. इस कथन के आधार पर प्रेमचंद जी ने स्वयं के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए बताया है कि वह स्त्री-जाति का सम्मान करते थे। उन्होंने स्त्री की पीड़ा को समझा था। इसका प्रभाव उनके साहित्य में देखने को मिलता है। 'हिंदू-धर्म-ग्रंथ' भी स्त्रियों का सम्मान करने का संदेश देते हैं।

उत्तर 10. प्रस्तुत कहानी में मनुष्य और पशुओं के आपसी संबंधों को अत्यंत भावात्मक ढंग से दर्शाया गया है। झूरी अपने बैलों को संतान की भाँति रखता था। उनकी देखभाल बहुत अच्छे तरीके से करता था। झूरी द्वारा बैल गया को दे देने पर दोनों बहुत दुखी हो उठते हैं। उसके द्वारा अच्छा व्यवहार न किए जाने पर विद्रोही हो उठते हैं तथा अनेक दुख सहने के पश्चात् अपने मालिक के पास पहुँचकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

उत्तर 11. शोषण से केवल हमारे शरीर पर ही चोट नहीं पहुँचती बल्कि हमारा मन भी आहत होता है। शोषण सहन करने से हमारा स्वाभिमान भी नष्ट हो जाता है। लेखक ने यह बात इस पाठ में प्रतीकात्मक रूप से कही है। हीरा और मोती ने अन्याय का डटकर सामना किया। यहाँ तक कि उनके प्राण भी संकट में पड़ गए। हमें अन्याय और शोषण का डटकर सामना करना चाहिए, फिर चाहे उसके लिए हमें कितने ही कष्ट क्यों न सहने पड़ें।

अध्याय-2

ल्हासा की ओर

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) जब फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता खुला नहीं था, तब नेपाल ही नहीं हिंदुस्तान की भी चीज़े इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थीं। वह व्यापारिक तथा सैनिक रास्ता था। इस रास्ते में जगह-जगह फ़ौजी चौकियाँ और किले बने हुए थे।

उत्तर (ii) इस रास्ते बनी फ़ौजी चौकियाँ और किले इस बात का प्रमाण है कि नेपाल-तिब्बत मार्ग सैनिक मार्ग भी था।

उत्तर (iii) एक परित्यक्त चीनी किले में लेखक चाय पीने के लिए ठहरे थे।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) लेखक से एक आदमी राहदारी माँगने आया तब लेखक ने उसे दोनों चिटें थमा दी।

उत्तर (ii) लेखक भिखमंगे के वेश में यात्रा कर रहा था। सुमति के साथ होने के कारण उसे ठहरने के लिए अच्छी जगह मिल गई थी। क्योंकि सुमति के जान-पहचान के आदमी वहाँ रहते थे।

उत्तर (iii) पाँच वर्ष बाद लेखक ने दूसरी यात्रा की। उसे ठहरने के लिए अच्छी जगह नहीं मिली।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) तिब्बत में यात्रियों को डाकुओं से अपनी जान का भय बना रहता था। डाकू पहले आदमी को जान से मारते थे, बाद में पैसा ढूँढ़ते थे। वे ऐसा इसलिए करते थे ताकि कोई उन्हें पहचान न सके।

उत्तर (ii) लेखक ने डाकुओं से बचने के लिए भिखमगें का वेश बनाया। जहाँ-जहाँ उन्हें डाकुओं जैसी सूरत वाले लोग दिखाई देते थे, वहाँ-वहाँ वह भीख माँगना शुरू कर देते थे।

उत्तर (iii) पहाड़ की ऊँची चढ़ाई, पीठ पर सामान होने के कारण लेखक के सामने कठिनाई आ रही थी।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) लेखक ने देखा कि दक्षिण की तरफ़ जो पहाड़ थे, वे श्वेत थे। उत्तर की तरफ़ बहुत कम बर्फ वाली चोटियाँ दिखाई दे रही थी।

उत्तर (ii) सर्वोच्च स्थान पर डाँड़े के देवता का स्थान था, जो पत्थरों के ढेरों, जानवरों के सींगों तथा रंग-बिरंगें कपड़े की झंडियों से सजाया गया था।

उत्तर (iii) लेखक दोपहर के समय वहाँ पहुँचे थे। समुद्र तल से वहाँ की ऊँचाई (17-18) फुट थी।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) तिङ्री का विशाल मैदान पहाड़ों से घिरा टापू के समान दिखाई दे रहा था, जिसमें दूर एक छोटी सी पहाड़ी मैदान के भीतर दिखाई पड़ती थी।

उत्तर (ii) गंडे बाँटने के लिए सुमति यजमानों के पास जाना चाहते थे तथा कुछ रुपये इकट्ठा करना चाहते थे। बोधगया से लाए कपड़े खत्म होने पर वह सामान्य कपड़े से गंडा बना लेते थे और इस प्रकार लोगों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करते थे।

उत्तर (iii) एक छोटी पहाड़ी तिङ्री समाधि गिरि थी।

गद्यांश - 6

उत्तर (i) शेकर की खेती के मुखिया नम्से थे। वह बड़े भद्र पुरुष थे। वह सबके प्रति प्रेम-भाव रखते थे।

उत्तर (ii) कंजुर-हस्तलिखित पोथियाँ थीं।

कंजुर की विशेषताएँ–

1) 1-1 पोथी 15-15 सेर से कम नहीं थी।

2) वे बड़े मोटे कागज़ पर अच्छे अक्षरों में लिखी हुई थीं।

उत्तर (iii) लेखक कुछ समय लेकर कंजुर की हस्तलिखित पोथियाँ पढ़ना चाहते थे।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. लेखक को जो घोड़ा मिला था, वह बहुत सुस्त था तथा उन्होंने गलत रास्ता पकड़ लिया था।

उत्तर 2. थुक्पा, भीटे, डाँड़ा, चोङी, तिङ्री।

उत्तर 3. क्योंकि वह डाकुओं का स्थान था जिनसे यात्रियों को अपनी जान का भय बना रहता था।

उत्तर 4. डाँड़े तिब्बत में डाकुओं के लिए सबसे अच्छी जगह थी। यहाँ पर मरे हुए लोगों की कोई परवाह नहीं करता था।

उत्तर 5. कानून व्यवस्था अच्छी न होने के कारण डाकुओं को किसी से भय नहीं था।

उत्तर 6. लेखक ने बड़ी विनम्रता से सुमति को अपनी समस्या बताई, जिससे उनका गुस्सा शांत हो गया।

उत्तर 7. बिलकुल अपरिचित होने पर भी आप घर के भीतर तक जा सकते हैं।

उत्तर 8. उस रास्ते में अनेक फ़ौजी चौकियाँ और किले बने हुए थे।

उत्तर 9. डाँड़े तिब्बत में सबसे खतरे की जगह है इसलिए लेखक ने इसे विकट कहा है।

उत्तर 10. ताकि उनकी पहचान न हो सके।

उत्तर 11. उन्होंने बोला कि क्या आप देख नहीं रहे कि मुझे कैसा घोड़ा मिला है?

उत्तर 12. गंडे समाप्त होने पर वह किसी भी सामान्य कपड़े से गंडे बना लेते थे।

उत्तर 13. लेखक ने कहा कि वह ल्हासा पहुँचकर सुमति को कुछ रुपये दे देंगे।

उत्तर 14. शंकर विहार के एक मंदिर में हस्तलिखित प्रतियाँ रखी थी।

उत्तर 15. तिङ्री के लिए चल पड़े।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. लेखक ने तिब्बत की यात्रा भिखारी के वेश में की थी क्योंकि उस समय भारतीयों को तिब्बत-यात्रा की अनुमति नहीं थी।

उत्तर 2. **i)** लेखक को तिब्बती समाज की विस्तार से जानकारी मिली।

ii) उन्हें वहाँ की भौगोलिक जानकारी प्राप्त हुई।

उत्तर 3. तिब्बत में उस समय यात्रियों के पास कई सुविधाएँ थी लेकिन इसके बावजूद उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उन्हें अपनी जान का भय बना रहता था। हथियार का कानून न होने के कारण डाकू खुले आम घूमते थे।

उत्तर 4. लेखक को जो घोड़ा मिला था वह बड़ा सुस्त पड़ गया था। एक जगह दो रास्ते फूट रहे थे और लेखक ने गलत रास्ता पकड़ लिया था, जिसके फलस्वरूप वह अपने साथियों से पिछड़ गया था। इसलिए सुमति को लेखक का इंतजार करना पड़ा था।

उत्तर 5. सुमति का मुँह गुस्से से लाल हो गया था। उन्होंने लेखक से कहा कि उन्होंने दो-दो टोकरी कंडे फूँक डाले, तीन-तीन बार चाय को गरम किया।

उत्तर 6. उन किलों में कभी चीनी पलटन रहा करती थी क्योंकि वह रास्ता व्यापारिक ही नहीं सैनिक रास्ता था। जगह-जगह फ़ौजी चौकियाँ और किले बने हुए थे परंतु अब अधिकतर मकान और किले गिर चुके थे और उनमें अब पलटन नहीं रहती थी। इसलिए वहाँ के किलों को परित्यक्त कहा गया है।

उत्तर 7. जब भी लेखक और उसके साथी डाकू या उनकी शक्ल जैसे लोगों को देखते थे तो कुची-कुची एक पैसा कहकर भीख माँगनें लगते थे।

उत्तर 8. तिब्बत में कानून व्यवस्था बहुत अच्छी नहीं हैं। सरकार पुलिस और खूफिया-विभाग पर बहुत खर्च नहीं करती इसलिए वहाँ डाकुओं को कानून का कोई भय नहीं है।

उत्तर 9. उस समय यात्रियों को अपनी जान का भय बना रहता था क्योंकि डाकू आदमी को पहले जान से मारते थे और बाद में उसकी जेब से पैसे ढूँढ़ते थे।

उत्तर 10. शेकर विहार में उन्हें कंजुर बुद्धवचन अनुवाद की 103 हस्तलिखित प्रतियाँ मिल गई थी। लेखक उन्हें पढ़ना चाहते थे इसलिए उन्होंने सुमति को रोकने का प्रयास नहीं किया।

उत्तर 11. यात्रा के दौरान लेखक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा–

(i) उन्हें वह यात्रा भिखारी के वेश में करनी पड़ी।

(ii) उन्हें कोई भटिया नहीं मिला।

(iii) उन्हें बहुत सुस्त घोड़ा मिला था।

(iv) भद्र वेश में होने के कारण उन्हें ठहरने के लिए उचित स्थान नहीं मिला था।

उत्तर 12. सुमति बौद्ध-भिक्षु थे। वह अत्यंत मिलनसार थे। वह धार्मिक प्रवृत्ति के इंसान थे। वह अत्यंत सहयोगी प्रवृत्ति के थे।

उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न –

उत्तर 1. तिब्बत का प्राकृतिक सौंदर्य इसलिए अनुपम है क्योंकि तिब्बत एक पहाड़ी क्षेत्र है। वहाँ बहुत ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं जिनमें कुछ बर्फ़ से ढके हैं, तो कहीं विशाल मैदान है।

उत्तर 2. सुमति बौध गया से गंडे लाकर अपने यजमानों को बाँटते थे परंतु जब वे गंडे समाप्त हो जाते थे तो वह किसी भी सामान्य कपड़े के गंडे बनाकर अपने यजमानों को देते थे। इस प्रकार वह अपने यजमानों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करते थे।

उत्तर 3. डाँड़े सौलह-सत्रह हज़ार फीट की ऊँचाई पर हैं जहाँ बहुत से पहाड़ और नदियाँ हैं। वहाँ कहीं श्वेत शिखर तो कहीं भीटे की तरह दिखने वाले पहाड़ हैं, तो कहीं कम बर्फ़ वाली चोटियाँ हैं।

अध्याय-3

उपभोक्तावाद की संस्कृति

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) नयी जीवन शैली के साथ उपभोक्तावाद का युग आया है। अधिक मात्रा में उत्पादन बढ़ रहा है। बाजार में मनुष्य को लुभाने वाले चीज आने लगी हैं और लोग स्वयं इन उत्पादों की भेंट चढ़ रहे हैं।

उत्तर (ii) विलासिता की सामग्रियों से बाजार भर जाने के कारण आज 'उपभोग-सुख' ही असली सुख कहलाने लगा है। उपभोग सुख के कारण दिखावे की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। और प्रत्येक चीज का कीमती ब्रांड लोगों को लुभा रहा है।

उत्तर (iii) पहले लोगों में त्याग की भावना थी। वह परोपकार से किए गए कार्यों में ही अपने असली सुख को ढूंढते थे। लेकिन अब सुख की व्याख्या पूरी तरह से बदल गई है। लोग आज विभिन्न वस्तुओं और भौतिक साधनों के उपभोग को सुख मानने लगे हैं।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) विलासिता की सामग्रियों से आश्य बाजार की उन वस्तुओं से है जिनकी माँग आय के साथ बढ़ जाती है। यह माँग अत्यावश्यक वस्तुओं के बिल्कुल ही विपरीत होती है।

उत्तर (ii) दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं में टूथ पेस्ट, कंघा, तोलिया, तकिया, झाड़ू, किताबें आदि शामिल हैं।

उत्तर (iii) बाजार की सामग्रियाँ हमें अपने मैजिक फॉर्मूले और विलासिता के चलते लुभा पाने में कामयाब हो पाती है।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) वस्तु और परिधान की दुनिया ट्रेंडी और महंगी है। इस दुनिया में हैसियत दिखाने के लिए लोग बिना समझ के महंगी वस्तुएँ खरीदने पर जोर देते हैं।

उत्तर (ii) नई जीवन शैली आने के बाद नए-नए डिजाइन के परिधान बाजार में आ गए हैं।

उत्तर (iii) आज के युग का बाजार पूरी तरह से भिन्न हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली सस्ती चीजों की जगह आज महंगी और ट्रेंडी वस्तुओं ने ले ली है।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) अमेरिका और यूरोप में मरने से पहले अंतिम संस्कार और अनंत विश्राम का प्रबंध करा सकते हैं। आपकी कब्र के आस-पास हरी घास होती है, फूल होते हैं। लेकिन इस मामले में अभी भारत की स्थिती अलग है।

उत्तर (ii) प्रतिष्ठा विभिन्न प्रकार की होती है जिनके कई रूप तो बिल्कुल विचित्र हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए ऐसी व्यवस्था की जाती है जो काफी हास्यास्पद होती हैं।

उत्तर (iii) उपभोक्तावादी समाज विशिष्टजन का समाज है। लेकिन समान्य लोग भी इसे ललचाई निगाहों से देखते हैं। विज्ञापन की दुनिया में इसे ही राइट चॉइस कहा गया है।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) पश्चिमी संस्कृति के फैलाव के कारण सीमित संसाधनों का घोर अपव्यय हो रहा है।

उत्तर (ii) बदलती संस्कृति के फैलाव से समाज में वर्गों की दूरी बढ़ रही है। समाजिक सरोकारों में कमी आ रही है। इसलिए बदलती संस्कृति का फैलाव चिंता का विषय है।

उत्तर (iii) भारतीय संस्कृति अपनाकर और विलासिताओं की सामग्रियों से दूर रहकर दिखावे की संस्कृति को फैलने से रोका जा सकता है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. समाज में बढ़ती अशांति का कारण उफभोक्ता की संस्कृति को अपनाना है। समाज महंगी वस्तुओं के उपयोग को प्रतिष्ठा का प्रतीक मानता है और पश्चिमी जीवन शैली को अपनाने का निरंतर प्रयास करता रहता है।

उत्तर 2. दरवाजे खिड़कियाँ खुले रखना का अर्थ अपनी सामाजिक नींव को हिलाए बिना स्वस्थ्य सांस्कृतिक प्रभावों का स्वागत करना है।

उत्तर 3. विज्ञापन हमारी जीवन शैली में नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह से प्रभाव डालते हैं।

उत्तर 4. उपभोक्तावाद का अर्थ है नयी जीवन शैली को अपनाना और उत्पादित की गई वस्तु के उपभोग से सुख की प्राप्ति का अनुभव करना।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. सुख की व्याख्या आज पूरी तरह से बदल गई है। आज सुख का अर्थ है 'उपभोग-भोग'। आज विभिन्न वस्तुओं और भौतिक साधनों के उपभोग को सुख मानने लगे हैं। परंतु पहले लोगों को त्याग, परोपकार तथा अच्छे कार्यो से मन को जो सुख-शांति मिलती थी उसे सुख मानते थे।

उत्तर 2. 'हम जाने-अनजाने उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं' का आशय यह है कि बाजार में उत्पादन बढ़ाया जा रहा है। लेकिन ग्राहक वस्तुओं की आवश्यकता और उसकी गुणवत्ता पर ध्यान दिए बिना वस्तुओं को खरीदकर उनका उपभोग कर लेना चाहते हैं। ऐसा प्रतीत होने लगा है जैसे हम उत्पादों का उपभोग नहीं कर रहे हैं, बल्कि उत्पाद हमारे जीवन का भोग कर रहे हैं।

उत्तर 3. नई जीवन शैली आने के बाद जन-समुदाय उत्पादों का भोजन समझकर भोग कर रहा है। इस कारण से बाजार में तरह-तरह की नई वस्तुएँ आ गई हैं जो लोगों को लुभा रही है और बाजार विलासिता की वस्तुओं से पूरी तरह से भर गए हैं।

उत्तर 4. उपभोक्तावाद के प्रभाव के कारण पुरुषों का झुकाव सौंदर्य प्रसाधनों की ओर बढ़ा है। अब पुरुष कीमती साबुन, तेल, ऑफ्टर शेव और कोलोन लगाने हैं।

उत्तर 5. धर्म, परंपराएँ, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, आस्थाएँ पूजा-पाठ आदि ये सभी शक्तियाँ संस्कृति पर नियंत्रण करती है।नई जीवन शैली के कारण लोगों का इनसे विश्वास उठता जा रहा है और ये शक्तियाँ कमजोर होती जा रही हैं।

उत्तर 6. हमारी सांस्कृतिक पहचान की सांस्कृतिक अस्मिता का पर्याय है। यानी की हमारे जीने, खान-पान, रहन-सहन, सोचने-विचारने आदि के तौर-तरीके जो हमें दूसरों से अलग करते हैं तथा जिनसे हमारी विशिष्ट पहचान बनी है। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण सांस्कृतिक अस्मिता कमजोर होती जा रही है।

उत्तर 7. विज्ञापन हमारे जीवन को कई प्रकार से प्रभावित करता है। मनुष्य को लुभाने के लिए विज्ञापन जी-जान एक रहे हैं। आज उत्पाद को बेचने के लिए हमारे चारों ओर विज्ञापनों का जाल फैला है। विज्ञापन को देखकर ही लोग आवश्यकताओं के लिए नहीं बल्कि दिखावे के लिए वस्तुएँ खरीद लेते हैं।

उच्च्य चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न –

उत्तर 1. आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे जीवन को पूरी तरह से प्रभावित कर रही है। उपभोक्ता की संस्कृति ने स्वार्थ की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है। इससे हमारी संस्कृति को ठेस पहुँची है। इस संस्कृति का दुष्परिणाम समाजिक अशांति में वृद्धि के रूप में सामने आने लगा है।

अपभोक्तावादी संस्कृति से बचने के उपाय-

i) स्वयं उत्पादों की भेंट ना चढ़ना।

ii) दिखावे की जगह आवश्यकता के लिए वस्तुएँ खरीदना।

iii) भारतीय संस्कृति को अपनाएँ रखना।

iv) दिखावे की प्रवृत्ति से खुद को बचाए रखना।

उत्तर 2. गांधी जी भारतीय जनसमुदाय पर उपभोक्तावाद की संस्कृति के प्रभाव को नकारात्मक मानते थे। गांधी जी का मानना था कि उपभोक्तावाद भारतीय संस्कृति के लिए सबसे बड़ा खतरा है। यह संस्कृति मानवीय गुणों का नाश करती है। हमारी सांस्कृतिक पहचान नष्ट हो रही है, परंपराएँ खत्म हो रही है, और आस्था का नाम ही खत्म हो गया है। इसलिए गांधी जी मनुष्यता को बढ़ावा देने वाली भारतीय संस्कृति को श्रेयस्कर मानते थे।

उत्तर 3. उपभोक्ता की संस्कृति ने व्यक्ति विशेष पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। विलासिता का बाजार मनुष्य को लुभा पाने में कामयाब रहा है। आधुनिक सुख सुविधाओँ और अधिक से अधिक साधनों का प्रयोग करके व्यक्ति संसाधन एवं धन दोनों का ही अपव्यय कर रहा है। उपभोक्तावादी संस्कृति के कारण हम धीरे-धीरे उपभोगों के दास बनते जा रहे हैं। प्रतिष्ठा और दिखावे के नाम पर हम इस संस्कृति के गुलाम होते जा रहे हैं।

उत्तर 4. 'व्यक्ति की केंद्रिकता' का अर्थ है-अपने आप तक सीमित होकर रह जाना। पहले व्यक्ति अपने सुख-दुख को दूसरे के साथ साझा करता था। वह अपनी हर खुशी को दूसरों के साथ बाँटता था। परंतु अब स्वार्थवृत्ति के कारण उसे दूसरों के दुख से कोई मतलब नहीं रह गया है। आज विभिन्न वस्तुओं और भौतिक साधनों का उपभोग ही व्यक्ति की केंद्रिकता बनकर रह गया है।

उत्तर 5. उपभोक्तावादी संस्कृति को अपनाना ही समाज में बढ़ति अशांति और आक्रोश का मुख्य कारण है। नई जीवन शैली का बाजार पर गहरा प्रभाव पड़ा है। विशिष्ट जन दिखावा प्रधान प्रवृत्ति के हो गए हैं और महंगी वस्तुओं के प्रयोग को ही प्रतिष्ठा का प्रतीक मानने

लगे हैं। जबकि कमजोर वर्ग इसे ललचाई नजरों से देखता है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने सुख की व्याख्या को बदल कर रख दिया है, जिसके कारण समाज में अशांति की वृद्धि हो रही है।

उत्तर 6. नयी जीवन शैली समाज में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। विशिष्ट जन सुख साधनों का खूब उपयोग कर रहे हैं जबकि सामान्य जन इसे ललचाई नजरों से देख रहे हैं। इस कारण सामाजिक दूरियाँ बढ़ रही हैं तथा सुख शांति नष्ट हो रही है। हमारी सांस्कृतिक पहचान नष्ट हो रही है और झूठे दिखावे के लालच में हम सच्चे विकास को भूल गए हैं।

उत्तर 7. विज्ञापन मानव के मन मस्तिष्क को बहुत अधिक प्रभावित करता है। कंपनी और उद्योग विज्ञापन के जरिए ही मनुष्य के ईर्द-गिर्द एक ऐसा जाल बुन देते हैं जिसमें मनुष्य ना चाहते हुए भी फंसता चला जाता है। गुणवत्ता और आवश्यकताओं को परे रखते हुए ही लोग बहुविज्ञापित और कीमती ब्रांड ही खरीदना पसंद करते हैं। चमक और सौंदर्य प्रसाधन हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं और ये विज्ञापन के जरिए ही संभव हो पाता है।

उत्तर 8. खिड़की-दरवाज़े खुले रखें इस कथन से गाँधी जी का तात्पर्य यह था कि हमें केवल स्वस्थ संस्कृति को अपनाने के लिए अपनी खिड़की-दरवाजें को खुला रखना चाहिए, क्योंकि उपभोक्तावादी संस्कृति ने हमारी बुनियादी नींव को हिलाने का प्रयास किया है। गांधी जी ने इसे भविष्य के लिए बड़ी चुनौती बताते हुए समाज के लिए एक बड़ा खतरा बताया है। जिस तरह से जन-समुदाय आज के समय में पशिमची जीवन शैली को बिना सोचे समझे अपना रहा है, गांधी जी इसे भारतीय संस्कृति के लिए घातक मानते हैं। इसलिए गांधी जी खिड़की-दरवाजों को खुले रखकर केवल स्वस्थ्य संस्कृति को अपनाने के लिए कहते हैं।

उत्तर 9. उपभोक्तावादी संस्कृति भारतीय संस्कृति से बिलकुल भिन्न हैं। यह संस्कृति भोग एवं स्वार्थ की प्रवृत्ति को दर्शाती है। जबकि भारतीय संस्कृति का कार्य परोपकार एवं त्याग की भावना को बढ़ावा देकर समाज को अपनी संस्कृति को अपनाने की ओर प्रेरित करना है। इस प्रकार उपभोक्ता की संस्कृति और नयी जीवन शैली के आने से हमारी संस्कृति के मूल तत्वों पर प्रहार हो रहा है। अब हम दिखावे के चक्कर में पड़कर त्योहारों और विभिन्न कार्यक्रमों में महँगे उपहार देकर अपनी हैसियत जताने लगे हैं। इसके परिणामस्वरुप भारतीय संस्कृति के मूल तत्व नष्ट हो रहे हैं।

अध्याय-4

साँवले सपनों की याद

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) सालिम अली का कहना था कि लोग पक्षियों को आदमी की नज़र से देखना चाहते हैं—यह उनकी बड़ी भूल है।

उत्तर (ii) लोग प्रकृति को आदमी की नज़र से देखते हैं। वे प्रकृति के साथ स्वयं को जोड़ते नहीं है। लोगों के भीतर केवल स्वार्थ की भावना होती है।

उत्तर (iii) 'रोमांच का सोता फूटने' से आशय यह है कि स्वयं के भीतर आनंद उत्पन्न होना।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) यदि आज भी कोई वृंदावन जाए तो उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि भीड़ को चीरकर अचानक श्रीकृष्ण सामने आ जाएँगे और अपनी बाँसुरी की धुन छेड़ देंगे और उन्हें यमुना नदी से जुड़ा संपूर्ण प्रसंग याद आ जाएगा।

उत्तर (ii) वाटिका का माली सैलानियों को हिदायत देता है और जब वह हिदायत देता है तो ऐसा लगता है जैसे बस कुछ ही क्षणों में श्रीकृष्ण वहाँ आ जाएँगे और अपने संगीत का जादू पूरी वाटिका में बिखेर देंगे।

उत्तर (iii) वृंदावन श्रीकृष्ण के जादू से कभी खाली नहीं हुआ।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) 'बर्ड वाचर' का अर्थ है– पक्षी-विज्ञानी। इस शब्द का प्रयोग सालिम अली के लिए हुआ है।

उत्तर (ii) सालिम अली और अन्य लोगों में बहुत अंतर है। सालिम अली स्वयं को प्रकृति से जोड़ देते हैं। उनके लिए यह दुनिया रहस्य से भरी हुई थी जबकि अन्य लोग प्रकृति को स्वार्थ की दृष्टि से देखते हैं।

उत्तर (iii) एकांत के क्षणों में सालिम अली को बिना दूरबीन के देखा जा सकता था।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) सालिम अली प्रसिद्ध पक्षी-प्रेमी तो थे ही साथ ही साथ पर्यावरण-प्रेमी भी थे। वह प्रकृति तथा पर्यावरण के प्रति अत्यंत सजग थे। 'साइलेंट वैली' की समस्या को लेकर वह तत्कालीन प्रधानमंत्री से भी मिले थे।

उत्तर (ii) चौधरी चरणसिंह तत्कालीन प्रधानमंत्री थे। वह प्रकृति-प्रेमी थे एवं पर्यावरण के प्रति अत्यंत सजग थे।

उत्तर (iii) पर्यावरण के संभावित खतरों के कारण चौधरी साहब की आँखें नम हो गई।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) 1) वह एक प्रकृति-प्रेमी इंसान थे।
2) वह सीधे-सादे इंसान थे।

उत्तर (ii) फ्रीडा डी. एच. लॉरेंस की पत्नी थी। वह महसूस करती थी कि उसकी छत पर बैठने वाली गौरैया उसके बारे में ढेर सारी बातें जानती है।

उत्तर (iii) वह एक प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी थे। उनकी आत्मकथा का नाम 'फॉल ऑफ़ ए स्पैरो' था।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. तहमीना सालिम अली की पत्नी थी।

उत्तर 2. सालिम अली की तुलना डी. एच. लॉरेंस से की गई है क्योंकि दोनों ही प्रकृति-प्रेमी थे।

उत्तर 3. फ्रीडा चाहती तो वह अपने पति के बारे में ढेर सारी बातें लिख सकती थी।

उत्तर 4. सालिम अली को 'बर्ड वॉचर' कहा गया है।

उत्तर 5. सालिम अली एक पक्षी-विज्ञानी थे। वह पक्षियों की दुनिया से जुड़े हुए थे।

उत्तर 6. सालिम अली ने।

उत्तर 7. अंतिम समय में मौत सालिम अली की उस रोशनी को नहीं छीन पाई जो पक्षियों की तालाश और उनकी हिफाजत के प्रति समर्पित थी।

उत्तर 8. सालिम अली की नई दुनिया मे उनकी पत्नी तहमीना ने काफी सहयोग किया था।

उत्तर 9. 'साइलैंट वैली' की समस्या को लेकर सालिम अली तत्कालीन प्रधानमंत्री से मिले थे।

उत्तर 10. प्रकृति प्रेमी तथा मिट्टी की सौंधी खुशबू पहचानने वाले।

उत्तर 11. 'फॉल ऑफ़ ए स्पैरो'

उत्तर 12. कैंसर

उत्तर 13. उनकी एयरगन से घायल हुई नीले कंठ वाली एक गौरैया।

उत्तर 14. उन्हें लगता है कि वह पक्षियों की खोज के लिए गए हैं और वह वापिस आ जाएँगे।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'मौत की खामोश वादी' शमशान घाट को कहा गया है। इस घाटी की ओर सालिम अली को ले जाया जा रहा था क्योंकि उनकी मृत्यु हो चुकी थी।

उत्तर 2. सालिम अली के इस सफ़र को अंतहीन सफ़र इसलिए कहा गया है क्योंकि मृत्यु के पश्चात कोई भी जीवन को पुनः प्राप्त नहीं कर सकता और उस सफ़र से कोई वापस नहीं आ सकता।

उत्तर 3. मृत्यु की गोद में सोए हुए सालिम अली की तुलना सोए हुए वन-पक्षी से की गई है क्योंकि वह भी अब प्रकृति में विलीन होने जा रहे थे।

उत्तर 4. उनके अनुसार मनुष्य पक्षियों को मनुष्यों की नज़र से देखते हैं क्योंकि इसमें उनका स्वार्थ छिपा होता है और स्वार्थ-भावना के कारण मनुष्य उनके हित के विषय में नहीं सोचते। इसलिए उन्होंने इसे भूल कहा है।

उत्तर 5. साँवले सपनों का हुजूम मौत की खामोश वादी में जा रहा था। उसे रोकना संभव इसलिए नहीं था क्योंकि वह सालिम अली की अंतिम यात्रा थी।

उत्तर 6. वृंदावन में सुबह शाम सैलानियों को होने वाली अनुभूति अन्य स्थानों की अनुभूति से पूर्णत: भिन्न है। उन्हें लगता है कि श्रीकृष्ण वृंदावन की गलियों से निकलकर आ जाएँगे और अपनी बाँसुरी का जादू चारों ओर बिखेर देंगे।

उत्तर 7. सालिम अली पक्षियों को पक्षियों की नज़र से देखते थे परंतु अन्य लोग उन्हें मनुष्य की नज़र से देखते हैं, जिसमें उनका स्वार्थ-भाव दिखाई देता है।

उत्तर 8. बचपन में उनकी एयरगन से नीले कंठ वाली गौरैया घायल होकर गिर गई थी। इस घटना ने उनके जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी-प्रेमी बना दिया।

उत्तर 9. लॉरेंस की पत्नी फ्रीडा ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि फ्रीडा जानती थी कि लॉरेंस प्रकृति और पक्षियों से असीम प्रेम करते थे। वे अपने घर की छत पर बैठने वाली गौरैया को बहुत प्रेम करते थे। वे घंटों उसके साथ समय बिताते थे।

उत्तर 10. सालिम अली के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

i) वह एक प्रसिद्ध पक्षी-विज्ञानी थे।
ii) वह प्रकृति-प्रेमी इंसान थे तथा पर्यावरण के प्रति अत्यंत सजग थे।

उत्तर 11. प्रस्तुत संस्मरण सालिम अली की मौत के समय लिखा गया था। इसलिए इस पाठ में करुणा का भाव है। लेखक ने उनके सपनों को भी याद किया है। उनकी दुखद स्मृति भी उससे जुड़ गई है। अत: यह शीर्षक पूर्णत: सार्थक है।

उत्तर 12. तहमीना सालिम अली के स्कूल की साथिन थी। उनकी जीवन-साथी बनने के पश्चात वह सदैव उनके लिए प्रेरणा-स्त्रोत रही। उनसे प्रेरणा पाकर ही वह अपने कार्य में पूर्ण तन्मयता से डूबे।

उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न –

उत्तर 1. सालिम अली प्रकृति-प्रेमी इंसान थे। वह पर्यावरण के प्रति अत्यंत सजग और सचेत थे। उनकी मृत्यु हो चुकी थी इसलिए लेखक ज़ाबिर हुसैन ने ऐसा कहा।

उत्तर 2. i) लॉरेंस का जीवन खुली किताब की तरह था।
ii) वह प्रकृति प्रेमी थे।
iii) उनके जीवन में कृत्रिमता नहीं थी।
iv) वह अपने आपको प्रकृति से जोड़कर रखते थे।

उत्तर 3. उन्हें नैसर्गिक ज़िंदगी का प्रतिरूप इसलिए कहा गया क्योंकि वह जीवन की सहजता में विश्वास रखते थे। उन्हें बनावटीपन अच्छा नहीं लगता था। सीधा एवं सरल हृद्य का होने के कारण उन्होंने स्वयं को पक्षियों की दुनिया से जोड़ा था।

उत्तर 4. सालिम अली के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

i) वह एक प्रसिद्ध पक्षी-विज्ञानी थे।
ii) वह प्रकृति-प्रेमी इंसान थे तथा पर्यावरण के प्रति अत्यंत सजग थे।

उत्तर 5. सामान्य लोग निम्नलिखित प्रकार से पर्यावरण की रक्षा में अपना योगदान दे सकते हैं–

i) कम से कम पेड़ काटकर।
ii) अधिक से अधिक वृक्षारोपण करके।
iii) नदियों, जल स्त्रोतों को प्रदूषित न करके।
iv) कम से कम कीटनाशकों का प्रयोग करके।
v) जैविक कृषि करके।

उत्तर 6. सामान्य लोग निम्नलिखित प्रकार से पर्यावरण की रक्षा में अपना योगदान दे सकते हैं–

i) नदियों, जल स्त्रोतों को प्रदूषित न करके।
ii) जैविक कृषि करके।
iii) कम से कम कीटनाशकों का प्रयोग करके।
iv) कम से कम पेड़ काटकर।
v) अधिक से अधिक वृक्षारोपण करके।

उत्तर 7. उनकी भाषा-शैली की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

i) प्रस्तुत पाठ में दुख और करुणा का भाव है।

ii) भाषा की रवानी और अभिव्यक्ति दिल को छू जाती है।

iii) प्रस्तुत संस्मरण में उन्होंने अंग्रेजी तथा उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है। जैसे आबशार, हुजूम, फॉल ऑफ ए स्पैरो, साइलेंट वैली आदि।

अध्याय-5

प्रेमचंद के फटे जूते

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) प्रेमचंद जी ने सिर पर मोटे कपड़े की टोपी, कुर्ता और धोती पहन रखी थी, पाँवों में केनवस के जूते थे। उनकी कनपटी चिपकी थी। गालों की हड्डियाँ उभर आई थीं परंतु घनी मूँछें चेहरे को भरा-भरा बना रही थीं।

उत्तर (ii) लापरवाही से उपयोग करने पर बंद के सिरों पर लोहे की पतरी निकल जाती है और छेदों में बंद डालने में परेशानी होती है, ऐसा ही यहाँ पर हुआ है इसलिए उन्होंने जूतों के फीते बेतरतीब से बाँध लिए थे।

उत्तर (iii) कनपटी– कान और आँख के बीच का स्थान।
केनवस– एक प्रकार का कपड़ा जो मोटा और चिकना होता है।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) लेखक ने बताया कि धोती को थोड़ा नीचे खींच लेने से अँगुली ढकी जा सकती थी और फ़ोटो में जूते का छेद दिखाई नहीं देता।

उत्तर (ii) मुस्कान के लिए अधूरी विशेषण का प्रयोग हुआ है क्योंकि वह मुसकान दर्द के किसी गहरे कुएँ के तल से बहुत प्रयास के पश्चात लाई गई है।

उत्तर (iii) फोटो खिंचाते समय चेहरे पर मुस्कान लाने की परंपरा का निर्वाह किया जाता है।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) मुंशी प्रेमचंद फ़ोटो का महत्व नहीं समझते क्योंकि फ़ोटो खिंचवाने के लिए तो लोग दूसरो से जूते, कपड़े आदि उधार माँग लेते हैं लेकिन प्रेमचंद ने फटे जूते के साथ ही फ़ोटो खिंचवा ली।

उत्तर (ii) प्रस्तुत पंक्ति में व्यंग्य यह है कि अपनी झूठी प्रतिष्ठा दर्शाने के लिए लोग दूसरों से चीजें माँगकर उनका प्रयोग करते हैं और दिखावे की प्रवृत्ति पल्लिवत करते हैं और प्रेमचंद दिखावे की प्रवृत्ति से कोसो दूर थे। इसलिए वह जूते नहीं माँग पाएँ।

उत्तर (iii) लेखक ने समाज की दिखावे की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) प्रस्तुत गद्यांश में बताया गया है कि जूता टोपी से हमेशा कीमती रहा है। एक जोड़ी जूतों पर पच्चीसों टोपियाँ न्योछावर हो जाती है और यह अंतर बहुत समय से चला आ रहा है।

उत्तर (ii) लेखक को यह विडंबना तीव्रता से चुभ रही है कि महान कथाकार, उपन्यास-सम्राट, युग प्रवर्तक कहलाने वाले मुंशी प्रेमचंद जी की आर्थिक स्थिति इतनी बुरी है कि उनके पास जूते खरीदने के लिए भी पैसे नहीं हैं।

उत्तर (iii) महान कथाकार, उपन्यास-सम्राट, युग-प्रवर्तक आदि।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) मुंशी प्रेमचंद जी को 'मेरी जनता के लेखक' कहकर संबोधित किया गया है क्योंकि उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से गरीबों की समस्याओं को उबारा है।

उत्तर (ii) फतेहपुर सीकरी आने-जाने में कुंभनदास का जूता घिस गया था। उन्हें इस बात का पछतावा था कि उनका समय बर्बाद हुआ और वह ईश्वर-भक्ति भी नहीं कर पाए।

उत्तर (iii) लेखक को लगता है कि जिस बनिये के तकादे से बचने के लिए मील-दो-मील का चक्कर काटकर घर लौटते थे उसकी वजह से उनका जूता फट गया।

गद्यांश - 6

उत्तर (i) दोनों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। यह दोनों में समानता थी। होरी के लिए नेय-धरम बँधन था जबकि मुंशी प्रेमचंद के लिए मुक्ति।

उत्तर (ii) प्रेमचंद के लिए नेम-धरम बँधन नहीं था क्योंकि वे जिस तरह मुस्करा रहे थे, ऐसा लगता था जैसे विपरीत परिस्थितियाँ भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाई थीं और नेम-धरम उनके लिए बंधन नहीं बल्कि मुक्ति था।

उत्तर (iii) लेखक अनुमान लगाता है कि घृणित चीज़ों की ओर मुंशी प्रेमचंद पाँव की अँगुली से इशारा करते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. प्रेमचंद जी ने बहुत ही सादे कपड़े पहने हुए थे।

उत्तर 2. उनके पैरों में केनवस के जूते थे। बाँए पैर के जूते में बड़ा छेद था।

उत्तर 3. फ़ोटो में खुशबू आना तो असंभव है परंतु अच्छी फोटो के लिए लोग बहुत दिखावा करते हैं।

उत्तर 4. प्रेमचंद सीधा-सादा जीवन जीते थे। उनके जीवन में कृत्रिमता नहीं थी क्योंकि उनके बाएँ जूते में छेद था।

उत्तर 5. उनका चित्र देखकर लेखक की दृष्टि उनके जूते पर अटक गई क्योंकि उनके बाएँ जूते में छेद था।

उत्तर 6. इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने प्रेमचंद के सीधे-सादे जीवन के बारे में बताया है।

उत्तर 7. साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद लेखक से अग्रज थे इसलिए उन्हें 'साहित्यिक पुरखे' कहा है।

उत्तर 8. लेखक को यह मुसकान विचित्र इसलिए लगती है क्योंकि प्रेमचंद के भीतर बहुत दर्द दबा हुआ था। दर्द से भरी उनकी मुसकान अधूरी थी।

उत्तर 9. लोग फ़ोटो खिंचाने के लिए बीवी माँग लेते हैं, इत्र चुपड़कर फ़ोटो खिंचवाते हैं।

उत्तर 10. लेखक के जूते का तलवा घिस गया है और प्रेमचंद का जूता ऊपर से फट गया है।

उत्तर 11. फतेहपुर सीकरी आने-जाने में उनका जूता घिस गया था।

उत्तर 12. 'आवत जात पन्हैया घिस गई, बिसर गयो हरि नामा।'

उत्तर 13. नेम-धरम प्रेमचंद के लिए बंधन नहीं बल्कि मुक्ति थी। अत: लेखक के अनुसार यह उनकी मजबूरी नहीं थी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. नीचे से घिस जाने के कारण लेखक जूते को अच्छा नहीं मानता था। वह केवल ऊपर से अच्छा दिखता था। जूते का तलवा घिस गया था जिसकी वजह से लेखक के पैर को चोट पहुँचती थी।

उत्तर 2. लेखक ने आशंका प्रकट की कि शायद प्रेमचंद बहुत चक्कर काटते रहे या फिर बनिये के तकादे से बचने के लिए मील-दो-मील का चक्कर लगाकर घर लौटते रहे थे।

उत्तर 3. लेखक की दृष्टि प्रेमचंद के जूते पर इसलिए अटक गई थी क्योंकि उनके बाएँ पैर के जूते में एक बड़ा छेद हो गया था जिससे पाँव की अँगुली दिखाई दे रही थी।

उत्तर 4. प्रेमचंद जी जब फ़ोटो खिंचवाने गए थे तो उन्होंने बड़ी सादी वेशभूषा धारण कर रखी थी जबकि आमतौर पर जब लोग फोटो खिंचवाने जाते हैं तो बहुत सुंदर वेशभूषा धारण करके जाते हैं।

उत्तर 5. मुंशी प्रेमचंद दिखावे की प्रवृत्ति से कोसों दूर थे। उनका जीवन सीधा-सादा था। उनके व्यक्तित्व में दोहरापन नहीं था। वह जैसे थे वैसे ही दिखते थे। इसी सादगी भरे व्यवहार के कारण उन्होंने जूते को ढकने का प्रयास नहीं किया।

उत्तर 6. प्रेमचंद जी के चेहरे पर विचित्र और अधूरी मुसकान थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि जनता के इस लेखक के हृद्य में जनता के लिए पीड़ा का भाव था। इसी कारणवश उनकी मुसकान विचित्र और अधूरी थी।

उत्तर 7. मुंशी प्रेमचंद महान कथाकार, उपन्यास-सम्राट और युग प्रवर्तक थे। हिंदी साहित्य-जगत में उनका स्थान अति उच्च है। इतने महान लेखक के पास जूते खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे–यह बहुत बड़ी ट्रेजडी थी।

उत्तर 8. इस पंक्ति का आशय यह है कि आज का समाज तुच्छ वस्तुओं को प्राथमिकता देता है। दिखावे के लिए वह अपने मान-सम्मान को भी दाँव पर लगाने से नहीं चूकता।

उत्तर 9. लेखक का कहना है कि चक्कर लगाने से जूता घिसता है, फटता नहीं। कुंभनदास का जूता भी फतेहपुर सीकरी में आने-जाने में घिस गया था और उन्होंने अपना समय व्यर्थ गँवा दिया था जिसके फलस्वरूप वह ईश्वर भक्ति नहीं कर पाए।

उत्तर 10. प्रेमचंद ऐसी वेशभूषा में फ़ोटो खिंचवाने के लिए इसलिए तैयार हो गए क्योंकि वह सीधे-सादे इंसान थे, दिखावे की प्रवृत्ति से कोसों दूर थे।

उत्तर 11. यदि अन्य लोगों की तरह प्रेमचंद भी फ़ोटो का महत्व समझते तो अच्छी तरह तैयार होकर, अच्छी वेशभूषा धारण करके फ़ोटो खिंचवाने जाते।

उत्तर 12. लेखक ने सदियों से चली आ रही सड़ी-गली रूढ़ियों और अंधविश्वासों की ओर संकेत किया है जो प्रगति के मार्ग में बाधक बनती है तथा समाज को आगे बढ़ने से रोकती हैं।

उत्तर 13. निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर आई है–

i) उनका जीवन सीधा-सादा था।
ii) वह दिखावे की प्रवृत्ति से कोसों दूर थे।
iii) वह गरीबों के परम हितैषी थे।
iv) वह एक महान साहित्यकार थे।

उत्तर 14. हमें लेखक हरिशंकर परसाई जी की निम्नलिखित विशेष बातें आकर्षित करती हैं–

i) वह दिखावे की प्रवृत्ति से अछूते नहीं है।
ii) उन्होंने प्रेमचंद जी की महानता को सराहा है।
iii) उन्होंने महान उपन्यासकार को भी नहीं बख्शा।

उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न–

उत्तर 1. लेखक प्रेमचंद को 'जनता के लेखक' कहकर यह बताना चाहते हैं कि उन्होंने भारत की गरीब जनता की परेशानियों को स्वयं महसूस किया था। वे जनता से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे। वह उनकी समस्याओं को अपनी समस्या समझते थे।

उत्तर 2. **वेशभूषा–** प्रेमचंद की वेशभूषा अत्यंत साधारण थी। उन्होंने धोती, कुर्ता ऊपर सिर पर टोपी पहनी हुई थी।

स्वभाव– वह सीधे-सादे इंसान थे। दिखावे की प्रवृत्ति से कोसों दूर थे। वे जैसे भीतर से थे, वैसे ही बाहर से दिखते थे।

उत्तर 3. उन्होंने कहा है कि यह भारतीय साहित्यकारों की विडंबना रही है कि देश को जागृत करने वाली इन प्रतिभाओं के पास अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी पर्याप्त पैसा नहीं था।

समानता – दोनों की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी।
विषमता – लेखक परदे का महत्व जानते हैं। प्रेमचंद जी पर्दे का महत्व नहीं जानते।

उत्तर 4. लेखक के विचार बदलने की निम्नलिखित वजहें हो सकती हैं–

i) प्रेमचंद को बनावटी जीवन पसंद नहीं था।
ii) वह सीधे-सादे इंसान थे।
iii) उनमें दिखावें की प्रवृत्ति नहीं थी।
iv) वह जैसे थे, वैसे ही दिखते थे।

उत्तर 5. पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग सामाजिक कुरीतियों के लिए किया गया है, जो कि समाज की प्रगति में बाधक बनती है। इन कुरीतियों को दूर करके ही समाज को सही दिशा दी जा सकती है।

उत्तर 6. विद्यार्थी स्वयं करें।

अध्याय-6

मेरे बचपन के दिन

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

गद्यांश - 1

उत्तर (i) लेखिका अपने परिवार में कई पीढ़ियों के बाद पैदा हुई थी। ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज दिया जाता था। अर्थात उन्हें मार दिया जाता था।

उत्तर (ii) लेखिका के बाबा ने बहुत दुर्गा पूजा की ताकि उनके परिवार में बेटी पैदा हो इसलिए लेखिका जब पैदा हुई तो उसकी बड़ी खातिर हुई और उसे वह सब नहीं सहना पड़ा, जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता था।

उत्तर (iii) उनके परिवार में कोई भी हिंदी नहीं जानता था।

गद्यांश - 2

उत्तर (i) सुभद्राकुमारी कविताएँ लिखती थीं और लेखिका का भी बचपन से तुक मिलाने में रुझान था। सुभद्रा की देखा-देखी लेखिका ने भी खड़ी बोली में लिखना आरंभ कर दिया था।

उत्तर (ii) छात्रावास में उनकी साथिन सुभद्रा कुमारी खड़ी बोली में कविताएँ लिखती थी, जिसे देखकर लेखिका भी खड़ी बोली में लिखने लगीं। अपनी माँ से प्रेरित होकर भी लेखिका ने ब्रज भाषा में लिखना आरंभ कर दिया था।

उत्तर (iii) भोर के समय में गाया जाने वाला भक्ति गीत।

गद्यांश - 3

उत्तर (i) सुभद्रा कुमारी को महादेवी वर्मा के द्वारा लिखी गई कविताएँ उनके डेस्क में रखी मिली। जब उन्हें पता चल गया तो उन्होंने पूरे छात्रावास को यह बता दिया कि महादेवी कविताएँ लिखती हैं।

उत्तर (ii) तब दोनों क्रॉस्थवेट में एक पेड़ की डाल पर बैठकर तुक मिलाते हुए कविताएँ रचा करती थीं।

उत्तर (iii) उस समय निकलने वाली एक पत्रिका।

गद्यांश - 4

उत्तर (i) 1917 के बाद भारतीय स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत थे। सत्याग्रह आरंभ हो गया था। आनंदभवन स्वतंत्रता के संघर्ष का केंद्र हो गया था। जहाँ-तहाँ हिंदी का प्रचार चलता था।

उत्तर (ii) हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए समय-समय पर कवि-सम्मेलन होते रहते थे, जहाँ अनेक हिंदी साहित्यकार उपस्थित रहते थे।

उत्तर (iii) लेखिका अपना नाम पुकारे जाने के लिए उत्सुक रहती थी।

गद्यांश - 5

उत्तर (i) छात्र/छात्राएँ अपने जेब-खर्च में से हमेशा एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आनंदभवन आते तो उन्हें दे देते थे।

उत्तर (ii) जब लेखिका बापू से मिलने आनंद भवन गई तो इनाम में मिला चाँदी का कटोरा बापू को दिखाने के लिए ले गई, जिसे बापू ने अपने पास रख लिया था।

उत्तर (iii) लेखिका को इस बात का दुख था कि बापू ने उससे कविता नहीं सुनी।

गद्यांश - 6

उत्तर (i) बचपन के संस्कारों का जीवन में बहुत महत्व होता है। बचपन के संस्कार जीवनभर हमारे साथ रहते हैं। इस संदर्भ में लेखिका ने ज्वारा के नवाब-परिवार का वर्णन किया है।

उत्तर (ii) ताई साहिबा नवाब साहब की बेगम थी। लेखिका ने बताया है कि उस समय धार्मिक और सांप्रदायिक झगड़े न होने के कारण उन दोनों परिवारों के बहुत अच्छे संबंध थे।

उत्तर (iii) लेखिका और नवाब साहब के बीच घनिष्ठ संबंध थे। इन संबंधों का आधार आपसी प्रेम और विश्वास था।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. एक छात्रा थी और छात्रावास में लेखिका के साथ कमरे में रहती थी।

उत्तर 2. क्योंकि वे अब स्मृतियाँ ही हैं, जो अब हमारे पास नहीं हैं।

उत्तर 3. उससे पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज दिया जाता था।

उत्तर 4. उसके बाबा उर्दू फ़ारसी जानते थे तथा पिता अंग्रेज़ी फ़ारसी।

उत्तर 5. लेखिका के संबंध में उनके बाबा के विचार बहुत उच्च थे। वह उन्हें विदुषी बनाना चाहते थे।

उत्तर 6. उर्दू फ़ारसी भाषा में उनकी रुचि नहीं थी तथा उन्हें कठिन लगती थी।

उत्तर 7. लेखिका को पढ़ाई के लिए क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा गया।

उत्तर 8. सुभद्राकुमारी चौहान

उत्तर 9. 'स्त्री-दर्पण'

उत्तर 10. सुभद्रा ने कहा कि तुम खीर बनाओ और चाँदी के कटोरे में मुझे खिलाओ।

उत्तर 11. गाँधी जी ने उनसे कटोरा तो ले लिया परंतु कविता सुनाने को नहीं कहा।

उत्तर 12. ज़ेबुन्निसा (कोल्हापुर से)।

उत्तर 13. ताई साहिबा ने लेखिका के भाई का नामकरण किया था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. महादेवी के परिवार में उर्दू, फ़ारसी भाषाएँ बोली जाती थीं। पिता को अंग्रेज़ी भाषा का अच्छा ज्ञान था। महादेवी की माता को हिंदी भाषा का ज्ञान था। लेकिन महादेवी पर हिंदी भाषा का अधिक असर हुआ।

उत्तर 2. उन्होंने अपनी कुलदेवी दुर्गा की पूजा की थी, ताकि उनके घर में बेटी पैदा हो। वह महादेवी वर्मा को पढ़ा-लिखाकर विदुषी बनाना चाहते थे। इस मामले में उनकी सोच समाज के अन्य पुरुषों से अलग थी।

उत्तर 3. उस समय विद्यालयों में धर्म और सांप्रदायिकता के भाव नहीं थे। सभी को अपनी बोली, भाषा को बोलने की आज़ादी थी।

उत्तर 4. उस कॉलेज में अनेक धर्म की लड़कियाँ साथ पढ़ती थी। उनमें आपसी प्रेम और भाईचारा था। उनकी मेस में प्याज तक का प्रयोग नहीं होता था।

उत्तर 5. लेखिका की माँ ब्रजभाषा में पदों की रचना किया करती थी। उनको देखकर तथा उनसे प्रेरित होकर लेखिका ने भी ब्रजभाषा में लिखना शुरू किया।

उत्तर 6. महादेवी वर्मा ब्रजभाषा में लिखा करती थी। जब वह छात्रावास में आई तो उन्होंने देखा कि सुभद्रा कुमारी खड़ी बोली में लिखती हैं। उनसे प्रेरित होकर लेखिका ने खड़ी बोली में लिखना आरंभ कर दिया। सुभद्रा कुमारी तथा लेखिका दोनों मिलकर तुकबंदी करती थीं।

उत्तर 7. उन्होंने स्वप्न जैसा इसलिए कहा है क्योंकि आज समाज में धर्म और संप्रदाय के नाम पर झगड़े बढ़ रहे हैं। लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं। समाज से प्रेम और भाईचारा समाप्त होता चला जा रहा है।

उच्च चिंतन एवं मनन क्षमता पर आधारित प्रश्न–

उत्तर 1. दोनों परिवारों में अत्यंत घनिष्ठ संबंध था। वे एक–दूसरे के तीज–त्योहार बड़े प्रेम व चाव से मनाते थें। यहाँ तक कि लेखिका के छोटे भाई का नामकरण भी 'ताई साहिबा' ने ही किया था। यह 'सांप्रदायिक सौहार्द' की ऐसी मिसाल है, जिससे समाज प्रेरणा लेकर प्रेम और भाइचारे का प्रचार–पसार कर सकता है।

उत्तर 2. दोनों की भेंट 'क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज' में हुई थी। सुभद्रा कुमारी सातवीं कक्षा में पढ़ती थी और महादेवी वर्मा पाँचवीं कक्षा में। दोनों की लेखन में रुचि थी। दोनों मिलकर तुक मिलाया करती थीं। सुभद्रा जी से प्रेरित होकर लेखिका ने खड़ी बोली में लिखना आरंभ कर दिया था।

उत्तर 3. महादेवी को साहित्य जगत में प्रसिद्धि दिलाने में काव्य–सम्मेलनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन सम्मेलनों में उन्हें महान साहित्यकारों को सुनने का, उनसे सीखने का अवसर मिला और महादेवी वर्मा की प्रतिभा को पहचान मिली।

उत्तर 4. (क) उस समय लड़कियों की दशा अत्यंत दयनीय थी। उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था। लेखिका जब पैदा हुई तो उसके कुछ वर्षों पहले तक लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था।

(ख) लड़कियों के संबंध में आज परिस्थितियाँ बहुत बदल गई हैं। आज उन्हें शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाते हैं। उनका सर्वांगीण विकास किया जाता है।

उत्तर 5. छात्रावास में सांप्रदायिकता नहीं थी। सभी छात्राएँ अपनी मातृभाषा में बात करती थीं। वहाँ सबको हिंदी और उर्दू पढ़ाई जाती थी। सभी एक ही मेस में खाना खाते थे। एक ही प्रार्थना में खड़े होते थे। कोई विवाद नहीं होता था।

उत्तर 6. विद्यार्थी स्वयं करें।

क्षितिज : भाग 1

पद्य खंड

अध्याय–7

साखियाँ एवं सबद (कबीर)

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

पद्यांश - 1

उत्तर (i) मानसरोवर एक जल–स्रोत है, जो तिब्बत (चीन) में स्थित है।

मानसरोवर–भक्ति रूपी सरोवर 'हंस–आत्मा' का प्रतीक है।

उत्तर (ii) हंस को अब मोक्ष रूपी मोती मिल गए हैं। वह उन्हें चुगना चाहता है, इसलिए वह अब और कहीं नहीं जाना चाहता।

उत्तर (iii) अनुप्रास– हंसा केलि कराहिं

यमक– मुकताफल मुकता चुगैं

पद्यांश - 2

उत्तर (i) कवि सच्चे भक्त को खोजता फिर रहा है क्योंकि उसे सच्चा भक्त मिल नहीं रहा। आज मनुष्य सच्ची भक्ति न करके दिखावे की भक्ति करता है।

उत्तर (ii) जब दो ईश्वर भक्त मिल जाते है तो सभी बुराइयाँ स्वतः समाप्त हो जाती है, मलिनता नष्ट हो जाती है और मन पवित्र हो जाता है।

उत्तर (iii) विष–बुराई तथा अमृत अच्छाई का प्रतीक है।

पद्यांश - 3

उत्तर (i) कबीर ने सीख दी है कि ज्ञान–प्राप्ति के लिए सहजता का मार्ग अपनाना होगा तथा व्यर्थ निंदा करने वालों की बातों को अनसुना करना होगा।

उत्तर (ii) कुत्तों के समान संसार को कहा है क्योंकि संसार व्यर्थ की बातें करता है। जब कोई व्यक्ति श्रेष्ठ कार्य करने के लिए आगे बढ़ता है तो संसारी लोग व्यर्थ की बातें कर उसकी आलोचना करते हैं।

उत्तर (iii) ज्ञान की तुलना हाथी से की गई है क्योंकि ज्ञान का स्थान सदैव ऊँचा रहता है।

पद्यांश - 4

उत्तर (i) पखापखी से अभिप्राय है– पक्ष-विपक्ष। पूरा संसार पक्ष-विपक्ष के झगड़ों में उलझकर रह गया है और ईश्वर को याद नहीं करता।

उत्तर (ii) जो व्यक्ति पक्ष-विपक्ष के झगड़ों में न पड़कर निष्पक्ष होकर ईश्वर का स्मरण करता है- सच्चे अर्थों में वही सच्चा संत होता है। वह व्यर्थ की बातों से ऊपर उठ जाता है।

उत्तर (iii) निरपख का शाब्दिक अर्थ-निष्पक्ष अर्थात जो किसी के भी पक्ष या विपक्ष में न हो।

पद्यांश - 5

उत्तर (i) हिंदू और मुसलमान अपने जीवन में इसलिए कुछ भी हासिल नहीं कर पाते क्योंकि दोनों ही अपने धर्म को श्रेष्ठ मानते हैं और व्यर्थ के झगड़ों में पड़े रहते हैं तथा अपने सच्चे लक्ष्य से दूर हो जाते हैं।

उत्तर (ii) जो व्यक्ति व्यर्थ के झगड़ों में न पड़कर सच्चे मन से ईश्वर-भक्ति करता है, उसी का जीवन सफल होता है। ऐसे व्यक्ति का एकमात्र लक्ष्य ईश्वर-भक्ति होता है।

उत्तर (iii) 'दुहुँ' के माध्यम से हिंदू और मुसलमान की ओर संकेत किया गया है।

पद्यांश - 6

उत्तर (i) काबा मुस्लिमों का पवित्र स्थल है और काशी हिंदुओं का। दोनों की पूजा पद्धति अलग होते हुए भी दोनों एक ही परमात्मा की संतान हैं। अर्थात् ईश्वरीय तत्व एक ही है, चाहे उसे राम के रूप में पूजो या रहीम के रूप में।

उत्तर (ii) मोटा आटा और मैदा दोनों ही गेहूँ के परिवर्तित रूप हैं और दोनों का स्त्रोत एक ही है। ठीक उसी प्रकार राम और रहीम में कोई भेद नहीं है। काबा और कैलाश में कोई अंतर नहीं है। भक्त को इन व्यर्थ की बातों में नहीं पड़ना चाहिए।

उत्तर (iii) राम और रहीम के काबा और कैलाश का।

पद्यांश - 7

उत्तर (i) अच्छे कर्म करने को हम महान मानते हैं क्योंकि इंसान अपने श्रेष्ठ कर्मों से महान बनता है और समाज में सम्मान प्राप्त करता है। यदि उसके कर्म श्रेष्ठ नहीं है तो उसका ऊँचे कुल में जन्म लेना भी व्यर्थ हो जाता है।

उत्तर (ii) साधु शराब से भरे सोने के कलश की निंदा करते हैं क्योंकि बुरे के संग होने से बुराई ही मिलती है।

उत्तर (iii) अनुप्रास अलंकार है।

सबद (पद)

पद्यांश - 1

उत्तर (i) लोग ईश्वर को मंदिर-मस्जिद, काबा और कैलाश में खोजते है। साथ ही ईश्वर को पाने के लिए योग भक्ति और तपस्या करते है।

उत्तर (ii) कबीर ने खोजी उस मनुष्य को कहा है जो मंदिर-मस्जिद और कण-कण में भगवान को ढूंढता है।

उत्तर (iii) कबीर ने ईश्वर का वास प्राणी की हर सांसों की सांस में बताया है।

पद्यांश - 2

उत्तर (i) संतो को संबोधित करते हुए कबीर कहते हैं कि हमारे अंतर्मन में ज्ञान की आँधी आई हुई है। इस आँधी ने हमारे मन की भ्रमरूपी टटिया को उड़ा दिया है। माया बंधन भी उसे रोक नहीं पा रहे हैं।

उत्तर (ii) कबीर ने भ्रम और माया की आँधी की बात की है।

उत्तर (iii) कबीर के अनुसार गुरु ज्ञान उत्पन्न होने से ही ईश्वर की खोज पूरी होगी और ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न होगा।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'मानसरोवर' से कवि का आशय भक्ति रूपी सरोवर से है।

उत्तर 2. तीसरे दोहे में कवि ने सहजता से प्राप्त ज्ञान को महत्व दिया है।

उत्तर 3. कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि ईश्वर हमारे हृद्‌य में विद्‌यमान है।

उत्तर 4. हंस आत्मा का प्रतीक है।

उत्तर 5. हंस अर्थात आत्मा के लिए।

उत्तर 6. जब एक इश्वर को एक सच्चा भक्त मिलता है तो सारा विष अमृत में परिवर्तित हो जाता है।

उत्तर 7. जो मनुष्य धर्म संप्रदाय के झगड़ों में न पड़कर सच्चे मन से ईश्वर-भक्ति करता है।

उत्तर 8. काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीम।

उत्तर 9. जब स्वर्ण कलश में शराब भरी हो तो सज्जन उसकी निंदा करते है क्योंकि वह बुराई से युक्त होता है।

उत्तर 10. अपने ही भीतर मिल जाता है क्योंकि ईश्वर हमारे हृद्‌य में बसते हैं।

उत्तर 11. क्योंकि दोनों अपने धर्म को श्रेष्ठ और दूसरे धर्म को हीन बताते हैं।

उत्तर-12. ज्ञान रूपी दीपक जब हृद्‌य में जलता है तो उससे अज्ञान रूपी मन का अंधकार नष्ट हो जाता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. जिस प्रकार चून और मैदे का स्रोत एक ही है-अर्थात गेहूँ। ठीक उसी प्रकार ईश्वरीय तत्व एक ही है। चाहे वह राम हो या रहीम।

उत्तर 2. कबीर 'सुबरन कलश' की निंदा इसलिए करते हैं क्योंकि उसके अंदर शराब भरी हुई है। शराब का संग अर्थात बुराई का संग होने के कारण उसे निंदा का पात्र बनना पड़ता है।

उत्तर 3. हंस रूपी आत्मा मानसरोवर अर्थात भक्ति रुपी सरोवर छोड़कर अन्यत्र इसलिए नहीं जाना चाहता क्योंकि अब उसे मोक्ष रूपी मोती मिल गए हैं और वह भक्ति में डूबे रहना चाहता है।

उत्तर 4. 'सुबरन कलस' - श्रेष्ठता का प्रतीक है।
इससे मनुष्य को सीख लेनी चाहिए कि श्रेष्ठ व उच्च कर्मों से उसे अपना जीवन बनाना चाहिए। उसे बुराइयों से दूर रहना चाहिए।

उत्तर 5. कबीर मनुष्य के लिए क्रिया-कर्म और योग-वैराग्य को व्यर्थ मानते हैं। उनके अनुसार ईश्वर को प्राप्त करने के लिए सच्चे मन की आवश्यकता है न कि बाहरी दिखावे की।

उत्तर 6. कबीर ने संसार को श्वान के समान बताया है। जब हाथी चलते हैं तो कुत्ते भौंकते हैं। ठीक उसी प्रकार जब कोई व्यक्ति ज्ञान और भक्ति-मार्ग पर अग्रसर होता है तो लोग व्यर्थ की बातें बनाते हैं।

उत्तर 7. मनुष्य बाह्‌य आडंबरों में उलझा रहता है। जिस कारण वह सच्चे मन से ईश्वर भक्ति में नहीं डूबता। यही कारण है कि मनुष्य ईश्वर को खोज नहीं पाता।

उत्तर 8. जो व्यक्ति पक्ष-विपक्ष के व्यर्थ के झगड़ों में न पड़कर निष्पक्ष होकर अर्थात सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति करता है-वही वास्तव में सच्चा संत कहलाता है।

उत्तर 9. छठी साखी के आधार पर कबीर ने कहा है कि धार्मिक भेदभाव के आधार पर समाज में झगड़े बढ़ते हैं।
अंतिम साखी के आधार पर कवि ने कहा है कि मनुष्य अपने कर्मों से श्रेष्ठ बनता है न कि कुल से।

उत्तर 10. कवि ने बताया है जब एक सच्चा प्रेमी मिलता है तो विष को अमृत में बदल देता है। अर्थात हमारे मन के सभी विकार दूर हो जाते है और हमारा मन निर्मल और पवित्र हो जाता है।

उत्तर 11. जो मनुष्य पक्ष-विपक्ष के झगड़ों में नहीं पड़ता तथा सच्चे मन से ईश्वर भक्ति करता है-वही सही मायने में जीवित है।

उत्तर 12. इस पंक्ति से आश्य है कि ज्ञान की आँधी के पश्चात जो जल बरसा उस जल से मन हरि अर्थात् ईश्वर की भक्ति में भीग गया।

काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न

उत्तर 1. कबीर ने बाह्य आडंबरों का विरोध करते हुए कहा है कि हम ईश्वर को पलभर तलाश से प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वह हमारे भीतर ही विद्यमान हैं। कबीर के अनुसार ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, काबे आदि में ढूँढ़ना व्यर्थ है।

उत्तर 2. निःसंदेह कबीर खरी-खरी कहने वाले सच्चे समाज-सुधारक थे। उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों (दोनों) की पूजा पद्धति पर व्यंग्य किया और कहा कि धार्मिक संकीर्णताओं से समाज में लड़ाई-झगड़े बढ़ते हैं।

उत्तर 3. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है। उसके काम ही उसे श्रेष्ठ बनाते हैं, यदि उसके कर्म श्रेष्ठ नहीं हैं तो उसका ऊँचे कुल में जन्म भी लेना व्यर्थ है क्योंकि अच्छे कार्यों से मनुष्य अपने कुल को भी ऊँचा उठा सकता है।

उत्तर 4. सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग? लिखित उक्ति की परवाह किए बिना ही मनुष्य को ज्ञानमार्ग की ओर अग्रसर होना चाहिए क्योंकि जब भी कोई मनुष्य अच्छे कार्य करने के लिए आगे बढ़ता है तो संसार के लोग व्यर्थ की छींटाकशी करके उसका मनोबल तोड़ने का प्रयास करते हैं।

उत्तर 5. गुरु अपने ज्ञान से मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। गुरु ज्ञान हमारे जीवन में न केवल प्रकाश ही फैलाता है बल्कि हमारी आत्मिक उन्नति करने में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शक होता है।

उत्तर 6. जब चारों ओर फैले अंधकार के बीच दीपक जलाया जाता है तो अँधेरा मिट जाता है और उजाला फैल जाता है। ठीक इसी प्रकार जब ज्ञान के दीपक को ह्दय में जलाया जाता है तो ज्ञान रुपी अंधकार मिट जाता है और ईश्वर को प्राप्त करने के सारे मार्ग खुल जाते हैं।

अध्याय-8

वाख

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

पद्यांश - 1

उत्तर (i) कवयित्री मनुष्य को सीख देती है कि प्रत्येक परिस्थिति में सम रहना चाहिए। समभावी होने पर मनुष्य का अज्ञान दूर होता है और उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है।

उत्तर (ii) मनुष्य जब अपने अंतःकरण और बाहरी इंद्रियों को नियंत्रण में कर लेता है तथा प्रत्येक परिस्थिति में सम रहता है, तब वह समभावी बन जाता है।

उत्तर (iii) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि समभावी होने पर अज्ञान दूर होगा तथा ज्ञान की प्राप्ति होगी।

पद्यांश - 2

उत्तर (i) कवयित्री ईश्वर भक्ति करने के तथा सद्कर्म रूपी खजाना एकत्र करने आई थी परंतु उसने अपना पूरा जीवन 'हठयोग साधना' में लगा दिया।

उत्तर (ii) कवयित्री भवसागर पार करके परमधाम जाना चाहती है परंतु उसने भक्ति और सदकर्म रूपी खजाना एकत्र नहीं किया और उसे यह चिंता हो रही है कि वह अपने ईश्वर को उतराई के रूप में क्या देगी?

उत्तर (iii) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवयत्री कहती है कि उन्होंने पूरा जीवन व्यर्थ गँवा दिया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. ज्ञानी व्यक्ति वह होता है जो स्वयं को पहचानता है। आत्म-विश्लेषण करता है।

उत्तर 2. रस्सी यहाँ साँसों के लिए प्रयुक्त हुआ है। वह कच्ची और नश्वर है।

उत्तर 3. कवयित्री मोक्ष प्राप्त कर परमधाम जाना चाहती है।

उत्तर 4. कच्चे धागे की रस्सी से आशय साँसों से है।

उत्तर 5. अति तप से मनुष्य अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक जाता है।

उत्तर 6. समभावी होने पर ज्ञान के द्वार खुल जाएँगे।

उत्तर 7. यहाँ दिन से अभिप्राय जीवन से है।

उत्तर 8. कवयित्री ने माझी ईश्वर को कहा है।

उत्तर 9. कवयित्री के अनुसार शिव का कण-कण में वास है।

उत्तर 10. अगर व्यक्ति सचमुच ज्ञानी है तो उसे पहले स्वयं की पहचान करनी चाहिए। यही ईश्वर की सच्ची पहचान है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवयित्री का मानना है कि यदि मनुष्य सांसारिक मोह-बंधनों में फँसा रहेगा तो ईश्वर का साक्षात्कार नहीं कर पाएगा और यदि वह सबसे विरक्त हो जाएगा, तो भी उसके अंदर अहंकार का भाव आ जाएगा। अत: उसे सम रहकर अपनी इंद्रियों को वश में करना है।

उत्तर 2. कवयित्री ईश्वर को साहिब मानती है।

कवियत्री के अनुसार मनुष्य स्वयं को जानकर ही ईश्वर को पहचान सकता है।

उत्तर 3. नाव जीवन (शरीर) का प्रतीक है। कवयित्री उसे साँसों रुपी कच्ची डोर से खींच रही है। वह डोर नश्वर है।

उत्तर 4. कवयित्री इसलिए चिंतित है क्योंकि भवसागर पार होने के लिए भक्ति-रूपी धन का होना आवश्यक है परंतु उसने अपना संपूर्ण जीवन हठयोग साधना में लगा दिया है।

उत्तर 5. कवयित्री ने अपने व्यर्थ हो रहे प्रयासों की तुलना कच्चे सकोरे से की है। जिस प्रकार कच्चे सकोरे में पानी नहीं टिकता ठीक उसी प्रकार नश्वर शरीर द्वारा किए उसके सारे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं।

उत्तर 6. कवयित्री मोक्ष प्राप्त करके परमधाम जाना चाहती है। उसके मन में यह तड़प बार-बार उठ रही है कि न जाने कब उसकी मुक्ति होगी।

उत्तर 7. कवयित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले सारे प्रयास इसलिए व्यर्थ हो रहे हैं क्योंकि उसमें अभी पूर्ण रुप से प्रौढ़ता नहीं आई है। यह कच्ची मिट्टी के उस बर्तन की तरह है जिसमें रखा जल टपकता रहता है और यही दर्द उसके हृद्य में दु:ख का संचार करता रहा है, और उसे प्रभु से मिलने नहीं देता।

उत्तर 8. बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए कवि ने इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने का सुझाव दिया है। अपने अंत:करण और बाहरी इंद्रियों को संयम में करके तथा समभावी होकर हम अपने अज्ञान को दूर करके ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न

उत्तर 1. परमात्मा को पाने के रास्ते में अनेक बाधाएँ आती हैं–

i) सांसारिक वस्तुएँ मोह-बंधन उसके मार्ग में बाधक बनते हैं।

ii) मनुष्य हठयोग-साधना के मार्ग पर चल पड़ता है परंतु उसमें सफल नहीं होता।

उत्तर 2. कवयित्री का कहना है कि जब मनुष्य अपने जीवन में किए गए कार्यों का विश्लेषण करता है तो उसे पता चलता है कि उसने सहकर्म (भक्ति) रूपी खजाना तो एकत्र ही नहीं किया।

इससे मनुष्य को शिक्षा मिलती है कि संसार रूपी सागर को पार करने में हमारे सहकर्म ही सहायक होते हैं।

उत्तर 3. विद्यार्थी स्वयं करें।

उत्तर 4. क) इस प्रकार के भेदभाव के कारण समाज में धर्म और संप्रदायों में झगड़े बढ़ रहे हैं। आपसी प्रेम, भाईचारा समाप्त हो रहा है। लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे हो रहे है।

ख) आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए हमें जाति, धर्म, संप्रदाय की संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठना होगा। एक-दूसरे के धर्मों का सम्मान करना होगा। 'वसुधैव कुटुम्बकम' के भाव को अपनाना होगा।

अध्याय-9

सवैये

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

पद्यांश - 1

उत्तर (i) श्री-कृष्ण की लाठी और कंबल के बदले रसखान तीनों लोकों का राज छोड़ने को तैयार है क्योंकि उनका संबंध श्री कृष्ण से है और कवि श्रीकृष्ण के प्रति अगाध श्रद्धा रखते हैं।

उत्तर (ii) रसखान ब्रजभूमि पर उगने वाली कटीली झाड़ियों पर करोड़ो सोने के महलों के सुखों को भी त्यागने के लिए तत्पर हैं। इससे स्पष्ट होता है कि रसखान का ब्रजभूमि के प्रति गहरा लगाव है।

उत्तर (iii) 1) करील के कुंजन ऊपर वारौं।

2) कौटिक ए कलधोत।

पद्यांश - 2

उत्तर (i) श्रीकृष्ण का रूप बनाने के लिए गोपी सिर पर मोर-पंख धारण करने के साथ गुंज पुष्पों की माला धारण करने, पीले वस्त्र धारण करने और लाठी लेकर गाय चराने के लिए ग्वालों के संग वन जाने को तैयार है।

उत्तर (ii) गोपी कृष्ण की बाँसुरी से ईर्ष्या करती है। उसका मानना है कि जब श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते हैं, तो वह अपनी सुध-बुध खो देते हैं और गोपियों की भी सुध नहीं लेते। बाँसुरी में वशीकरण की शक्ति है।

उत्तर (iii) मुरलीधर में श्लेष अलंकार

पूरी पंक्ति में अनुप्रास।

पद्यांश - 3

उत्तर (i) श्रीकृष्ण की ओर आकर्षित होने से बचने के लिए गोपियाँ बाँसुरी के वशीकरण से बचने का उपाय ढूंढती है। वे कानों में अँगुलियाँ डाल देती हैं। वे नहीं चाहती कि उनके कानों में बाँसुरी की मंद धुन पड़े।

उत्तर (ii) गोपियाँ ब्रज के लोगों को बताना चाहती है कि श्रीकृष्ण की बाँसुरी और मुस्कान में वशीकरण की शक्ति है। जब श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते हैं तो वे अपनी सुध-बुध खोकर उसमें डूब जाती हैं।

उत्तर (iii) कृष्ण अट्टालिका पर चढ़कर गोधन गाथा गाया करते थे।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. क्योंकि उनका संबंध श्रीकृष्ण से है।

उत्तर 2. कवि कृष्ण भक्त है। श्रीकृष्ण के प्रति उनकी अनन्य भक्ति भावना है।

उत्तर 3. अनुप्रास अलंकार।

उत्तर 4. पशु होने की स्थिति में वह नंद बाबा की गायों के बीच रहना चाहता है।

उत्तर 5. कवि अपना बसेरा कदंब की डालियों पर बनाना चाहते हैं।

उत्तर 6. कृष्ण की लाठी और कंबल के लिए कवि तीनों लोकों का राज्य न्योछावर करने को तैयार हैं।

उत्तर 7. वह श्रीकृष्ण की बाँसुरी अपने होठों पर नहीं लगाना चाहती।

उत्तर 8. उनकी बाँसुरी की धुन में वशीकरण की शक्ति है।

उत्तर 9. वह कह रही है कि श्रीकृष्ण की मुसकान में वशीकरण की शक्ति है।

उत्तर 10. कवि रसखान ने।

उत्तर 11. यदि हमें श्रीकृष्ण की भक्ति और अनुकंपा प्राप्त हो जाए तो सभी सांसारिक वस्तुएँ उसके समक्ष तुच्छ हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि रसखान मनुष्य रूप में ब्रजभूमि पर जन्म लेना चाहते हैं क्योंकि वह उनके इष्ट की जन्मभूमि है। कवि श्रीकृष्ण का सान्निध्य पाने के लिए रसखान यहाँ जन्म लेना चाहता है।

उत्तर 2. हमारे जन्म-मरण पर हमारा कोई अधिकार नहीं होता। यह सब निश्चित होता है इसलिए कवि रसखान ने कहा है कि यदि मेरा जन्म पशु रूप में होता है तो उसपर मेरा कोई वश नहीं है।

उत्तर 3. कवि गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहता है क्योंकि श्रीकृष्ण ने गोकुलवासियों की रक्षा के लिए उसे अपनी अँगुली पर धारण किया था।

उत्तर 4. श्रीकृष्ण यमुना नदी के किनारे कदंब के पेड़ के नीचे मधुर बाँसुरी बजाया करते थे। कवि पक्षी रूप में कदंब की डालियों पर बसेरा करना चाहते हैं ताकि वह समीपता से श्रीकृष्ण का रूप निहार सके।

उत्तर 5. गोपी श्रीकृष्ण की भाँति पीले वस्त्र धारण करना चाहती है क्योंकि उसकी सखी ने आग्रह किया है कि वह श्रीकृष्ण का स्वाँग करे।

उत्तर 6. सखी श्री कृष्ण का रूप निकटता से निहारना चाहती है। वह श्रीकृष्ण का सामीप्य पाना चाहती है इसलिए उसने गोपी से श्री कृष्ण का मोहक रूप धारण करने का आग्रह किया, जिसमें गोपी पीले वस्त्र पहने, मोर-मुकुट धारण करे तथा गूँज पुष्पों की माला पहने।

काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न

उत्तर 1. एक गोपी दूसरी गोपी के कहने से श्रीकृष्ण का रूप धारण करती है परंतु वह श्रीकृष्ण की मुरली को अपने होठों से स्पर्श नहीं करना चाहती क्योंकि वह मुरली से ईर्ष्या करती है। जब कृष्ण मुरली बजाते हैं तो वह अपनी सुध-बुध खो देते हैं।

उत्तर 2. कवि आठों सिद्धियों और निधियों से मिलने वाले सुख करोड़ों सोने-चाँदी के महलों, तीनों लोकों के सुखों को त्यागने के लिए तैयार है।

उत्तर 3. कवि रसखान श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य श्रद्धा रखते हैं। उन्हें अपने ईष्ट से जुड़ी प्रत्येक वस्तु तथा ब्रज भूमि से विशेष लगाव है इसलिए उनके भीतर यह तड़प है कि पता नहीं कब उन्हें ब्रज के वन, बाग, तालाब को निहारने का अवसर प्राप्त होगा? और कब वह ब्रजभूमि के दर्शन कर पाएँगे?

उत्तर 4. ब्रजभूमि के प्रति कवि का अनन्य प्रेम अनेक रूपों में प्रकट हुआ है। वह मनुष्य, पशु, पक्षी हर रूप में श्रीकृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करना चाहते हैं। वह पत्थर के रूप में भी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहते हैं।

उत्तर 5. जब श्रीकृष्ण मधुर स्वर में मुरली बजाते हैं तो गोपियाँ विवश होकर उसी ओर खिंची चली जाती हैं। श्रीकृष्ण की मधुर मुसकान भी सबको अपने वश में कर लेती है। उनकी मुसकान और बाँसुरी में वशीकरण की शक्ति है इसलिए वे स्वयं को विवश पाती हैं।

अध्याय-10

कैदी और कोकिला

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

पद्यांश – 1

उत्तर (i) कवि कोयल से पूछ रहा है कि वह क्या गा रही है और गाते-गाते चुप क्यों हो जाती है? कवि अनुमान लगाता है कि शायद वह किसी का संदेशा लाई है।

उत्तर (ii) कवि को लगता है कि इस जेल में कोयल ही एकमात्र उसकी साथी है जो कि उसके दुखों से दुखी है, उसे लगता है कि इसलिए वह उसके लिए संदेश लाई है।

उत्तर (iii) कवि– माखनलाल चतुर्वेदी

कविता– कैदी और कोकिला

पद्यांश - 2

उत्तर (i) कविता में अंग्रेज़ी शासन का वर्णन है। उसे तम के समान अर्थात निराशामयी बताया गया है।

उत्तर (ii) कवि को डाकू, चोरों और लुटेरों के बीच रखा गया है। उसे वहाँ रखना इसलिए उचित नहीं है क्योंकि वह एक स्वतंत्रता सेनानी है।

उत्तर (iii) चंद्रमा के जाने पर अंधकार हो गया है जिससे कवि निराशा का अनुभव कर रहा है।

पद्यांश - 3

उत्तर (i) इस पंक्ति के माध्यम से कोयल की ओर संकेत किया गया है। कवि को लगता है कि अवश्य ही कोयल को पीड़ा हुई है और वह उसे सहन नहीं कर पाई है, जिसके फलस्वरूप वह आधी रात को ही चीख पड़ी है।

उत्तर (ii) कवि अनुमान लगा रहा है कि कोयल ने शायद जंगल की आग देख ली है अर्थात उसे किसी संकट का आभास हो गया है। इसलिए वह आधी रात को चीख उठी है।

उत्तर (iii) आने वाले संकट का।

पद्यांश - 4

उत्तर (i) कवि आधी रात को कोयल से बातें कर रहा है क्योंकि वह अकेला है और काल-कोठरी में बंद है। उस समय उसके पास कोयल ही है। इसलिए वह उससे बातें कर रहा है।

उत्तर (ii) कोयल अपनी मधुर वाणी के माध्यम से विद्रोह के बीज बो रही है। इससे सभी सेनानियों के भीतर देशभक्ति का भाव जागृत होगा और वे अंग्रेज़ों से प्रतिकार ले सकते हैं।

उत्तर (iii) विद्रोह-बीज का अर्थ कष्टों से निरंतर लड़ते रहने की प्रेरणा देना है।

पद्यांश - 5

उत्तर (i) काले संकट-सागर से आशय-अंग्रेज़ी शासन से है। अंग्रेज़ों ने चारों ओर कुशासन के कारण बहुत ही बुरा वातावरण बना रखा था।

उत्तर (ii) कोयल का गीत सुनकर कवि को लगता है कि वह अपने मधुर गीतों को इस वातावरण में क्यों फैला रही है? कवि को लगता है, कि वह अपने चमकीले गीतों से शत्रुओं से लड़ने की प्रेरणा दे रही है। क्योंकि वह सबमें साहस भर रही है।

उत्तर (iii) कोयल के गीतों के लिए 'चमकीले' विशेषण का प्रयोग किया गया है।

पद्यांश - 6

उत्तर (i) कवि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीयों के मन में स्वतंत्रता के प्रति अलख जगाई होगी। उसने भारतीयों के हृद्य में उमंग, ओज और क्रांति के भाव भरे होंगे।

उत्तर (ii) मोहनदास करमचंद गांधी को मोहन कहकर संबोधित किया गया हैं। उन्होंने भारत को अंग्रेज़ों से मुक्त कराने का व्रत ले रखा था।

उत्तर (iii) देशवासियों को स्वतंत्रता के प्रति जागृत करना।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कोयल हरी डाली पर बैठकर अपनी मधुर वैभवशाली आवाज से संपूर्ण सृष्टि को अलंकृत करती है, उसके मधुर गीतों से उसकी खुशी झलकती है, परन्तु अब वह अपनी इन विशेषताओं को नष्ट करने पर तुली है।

उत्तर 2. क्योंकि स्वतंत्रता-सेनानियों को हथकड़ियाँ गहनों के समान प्रतीत होती थी।

उत्तर 3. जेल को, जहाँ कवि को बंद किया गया था।

उत्तर 4. जीने के लिए भोजन और पानी अति आवश्यक हैं। ये सभी कवि को प्राप्त नहीं होते।

उत्तर 5. कवि को इसलिए आश्चर्य होता है क्योंकि कोयल आधी रात को चीख उठती है।

उत्तर 6. कवि ने कोठरी, टोपी, कंबल, बेड़ियों आदि को काला बताया है।

उत्तर 7. कवि परतंत्र है जबकि कोयल स्वतंत्र है।

उत्तर 8. तेरा नभ भर में संचार।

मेरा दस फुट का संसार।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. कवि ने कोयल की वेदना को बोझ के समान बताया है क्योंकि वह उस वेदना को सह नहीं पाई और आधी रात को ही बोल पड़ी।

उत्तर 2. i) उसने किसी जंगल की ज्वालाएँ देख ली हैं।

ii) शायद वह स्वतंत्रता-सेनानियों के हृद्य में विद्रोह का बीज बोना चाहती है।

iii) संभवत: वह स्वतंत्रता-सेनानियों की स्थिति देखकर दुखी हो उठी है।

उत्तर 3. ब्रिटिश राज का गहना हथकड़ियों को कहा गया है क्योंकि स्वतंत्रता सेनानियों को वह बेड़ियाँ हथकड़ियों के समान प्रतीत होती थीं।

उत्तर 4. कवि की अँगुलियाँ मिट्टी पर गाने लिख रही थी।

कवि तथा उसके साथी जेल में दिन-रात कोल्हू के बैल की तरह काम करते हैं। अर्थात दिन रात उनसे कड़ी मेहनत करवाई जाती है।

उत्तर 5. कवि कहता है कि जो पहरेदार वहाँ पहरा देते हैं, वे उनसे दुर्व्यवहार करते हैं। उनका यह व्यवहार सार्पिणी की फुँकार की भाँति लगता है।

उत्तर 6. कवि परतंत्र है, जबकि कोयल स्वतंत्र है। वह कहीं भी आ-जा सकती है। वह स्वच्छंद है और उसपर कोई भी रोक-टोक नहीं है, जबकि कवि बेड़ियों में जकड़ा है, उसपर दिन रात नज़र रखी जाती है इसलिए उसे कोयल से ईर्ष्या हो रही है।

उत्तर 7. कोयल की मधुर आवाज़ बरबस ही सबका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। इसलिए उसने कोयल से अपने मन की बात कही होगी।

उत्तर 8. प्रस्तुत पंक्तियों में काली शब्द की आवृत्ति हुई है। प्रस्तुत शब्द निराशामयी वातावरण की ओर संकेत कर रहा है अर्थात चारों ओर निराशा व्याप्त हैं।

उत्तर 9. कोयल की कूक सुनकर कवि की निम्नलिखित प्रतिक्रियाएँ थीं–

i) कोयल आधी रात को क्यों चीख उठी है?

ii) वह अपनी मधुर वाणी से विद्रोह के बीज क्यों बो रही है?

iii) क्या उसने किसी संकट को देख लिया है?

काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न

उत्तर 1. कवि एक स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने अंग्रेज़ों के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी। अंग्रेज़ सरकार स्वतंत्रता-सेनानियों के साथ अमानवीय व्यवहार करती थी। उन्हें तिल-तिलकर मरने के लिए विवश करती थी।

उत्तर 2. अंग्रेज़ कवि कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार करते थे। उन्हें पेटभर खाना नहीं देते थे। अंग्रेज़ उन्हें तड़पा-तड़पाकर मारना चाहते थे ताकि उनके ऐसे जीवन से दूसरे लोग भी सबक ले सकें।

उत्तर 3. दोनों की स्थिति में ज़मीन-आसमान का अंतर है। कवि परतंत्र है जबकि कोयल स्वतंत्र है। वह कहीं भी आ-जा सकती है। वह पूरे नभ में स्वच्छंद विचरण कर सकती है जबकि कवि का संसार केवल दस फुट की काल कोठरी तक सीमित है। दुखी होने पर उसे रोने का अधिकार भी नहीं है।

उत्तर 4. स्वतंत्रता सेनानी हमारे लिए देश-भक्त थे जबकि अंग्रेज़ों के तो वे कट्टर शत्रु थे। वे अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करते थे इसलिए स्वतंत्रता-सेनानियों और अपराधियों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाता होगा।

उत्तर 5. पराधीन भारत में 'ब्रिटिश सरकार' भारतीयों के साथ बहुत दुर्व्यवहार करती थी। उनसे दिन-रात कौल्हू के बैल की तरह काम लिया जाता था। उन्हें बेड़ियों में बाँधा जाता था। उन्हें अंधेरी कोठरियों में रखा जाता था। उन्हें भरपेट खाना नहीं दिया जाता था।

उत्तर 6. अंग्रेज़ी शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है क्योंकि अंग्रेज़ी सरकार भारतीयों का शोषण करती थी। जो भी स्वतंत्रता सेनानी उनके विरुद्ध आवाज़ उठाता था, उसे कुचल दिया जाता था। जेलों में स्वतंत्रता सेनानियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था।

अध्याय-11

ग्राम श्री

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

पद्यांश – 1

उत्तर (i) प्रस्तुत पंक्तियों में खेतों में फैली हरियाली का वर्णन किया गया है।

उत्तर (ii) खेतों में फैली हरियाली मखमली चादर जैसी प्रतीत होती है।

उत्तर (iii) नीला आकाश हरी-भरी फसलों से भरी धरती पर झुका हुआ है।

पद्यांश - 2

उत्तर (i) गेहूँ और जौं में बालियां आने के बाद पृथ्वी को रोमांचित माना गया है।

उत्तर (ii) सोने की किंकिणियों से आश्य खेतों में लहलहाती सनई तथा अरहर जैसी फसलों से है।

उत्तर (iii) कवि ने नीली कलियों की शोभा को हरे-भरे खेतों के बीच देखा।

पद्यांश - 3

उत्तर (i) कविता में मटर का वर्णन हँसती हुई सखियों के साथ किया गया है। मटर के पौधे पर सफेद रंग के फूल खिले हैं, जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो मटर रूपी सखियाँ हँस रही है।

उत्तर (ii) मखमली पेटियों में प्रकृति बीजों की लड़ी को छिपाती है।

उत्तर (iii) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि की कल्पना सजग हो उठी है, जिसमें उन्होंने रंगों से भरे प्राकृतिक वातावरण का बड़ा ही मनभावन चित्रण किया है।

पद्यांश - 4

उत्तर (i) प्रस्तुत पंक्तियों में आम की सोभा स्वर्ण मंजरियों के समान बताई गई है। बाग-बगीचों में उगे आम डालियों पर ऐसे नजर आते है, जैसे किसी ने सोने के फूलों से डालियों को लद दिया हो।

उत्तर (ii) ढाक और पीपल के पेड़ों से पत्ते झड़ने लगे हैं।

उत्तर (iii) समय के साथ प्रकृति में अधिक सौंदर्य आ जाता है। बाग-बगीचों में उगे आम की डालियाँ भी बौरों से लद जाती है। कोयल मतवाली होकर आम के बागों में कूकने लग जाती है। कटहल के पेड़ों से और अधखिले जामुन के फूलों से माहौल महकने लग जाता है।

पद्यांश - 5

उत्तर (i) अमरूद पकने के बाद पीले रंग के हो जाते हैं और पूर्णतया पक जाने पर उन पर लाल-लाल चित्तियाँ पड़ जाती हैं।

उत्तर (ii) बेर पककर मीठे हो गए हैं। और पके हुए बेर पेड़ पर अधिक सुनहरे लग रहे हैं।

उत्तर (iii) लौकी और सेम पूरे जमीन पर उधर उधर फैल गई है। टमाटर मखमल की तरह लाल हो गये हैं। मिर्च के पौधे किसी हरी भरी थैली की तरह लग रहे हैं।

पद्यांश - 6

उत्तर (i) गंगा की रेती बालू के सांपो से अंकित होकर सूर्य का प्रकाश पड़ने के कारण सतरंगी बनकर चमक रही थी। गंगा के तट के चारों ओर लगे तरबूजों के खेत बड़े सुंदर दिखाई पड़ रहे थे।

उत्तर (ii) गंगा किनारे बगुले अपनी उँगलियों की कँघी से अपनी कलंगी संवार रहे हैं।

उत्तर (iii) मगरौठी एक प्रकार की विशेष चिड़िया है जो गंगा किनारे बैठ कर झपकी लेती नजर आ रही है।

पद्यांश - 7

उत्तर (i) सर्दी की धूप में जब सूर्य की किरणें खेतों की हरियाली पर पड़ती हैं, तो वो इस तरह चमक उठती हैं, मानो वो खुशी से झूम रही हों। कवि को ये दोनों आलस्य से भरे सोये हुए जैसा बताया है।

उत्तर (ii) भीगी अँधियाली से तात्पर्य सर्दियों की रात में पड़ने वाली 'ओस' से है जिसके कारण अँधेरा भीगा हुआ प्रतीत होता है।

उत्तर (iii) कवि ने गाँव को 'मरकत डिब्बे सा खुला' इसलिए कहा है क्योंकि गाँव में चारों ओर हरे हरे खेतों के बीच रंग बिरंगे फूल बेशकीमती जवाहरातों की तरह लग रहे हैं, जिसकी सुंदरता सभी को दिखाई देती है।

अति लघूत्तात्मक प्रश्न

उत्तर 1. गंगा के दोनों किनारों की चमकती रेत धूप में सतरंगी प्रतीत हो रही है। हवा से पानी के लहराने के कारण रेत पर टेढ़ी मेढी रेखाएँ बन गई हैं, जो साँपों के चलने से बनी हुई लगती है। इनके किनारे सरपत से लँकी हुई तरबूजों की खेती सुंदर लग रही है। सब देखकर कवि अभिभूत है।

उत्तर 2. पेड़-पौधे एवं फसलों के कारण चारों ओर होती हरियाली, सरदियों की गुलाबी धूप, हमें नया जीवन देने का काम करते हैं। इसलिए प्राकृतिक सौंदर्य को जीवनदायिनी कहा गया है।

उत्तर 3. कवि ने शिमला मिर्च के पौधों पर आई बड़ी-बड़ी मिरचों को हरी थैली कहा है।

उत्तर 4. ग्राम श्री कविता का मूल उद्देश्य गाँव के प्राकृतिक वातावरण का सजीव चित्रण करना है।

उत्तर 5. (i) प्रकृति किसी भी तरह का कोई भेदभाव नहीं करती।

(ii) जीवित रहने के लिए हमें जो कुछ भी चाहिए, जैसे भोजन, पानी, हवा और आश्रय, प्राकृतिक संसाधनों से आते हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. सूरज की सफेद किरणों को चाँदी की उजली जाली के समान कहा गया है। यह जाली खेतों में दूर-दूर तक फैली हरियाली से लिपटी हुई दिखाई दे रही है।

उत्तर 2. कविता के आधार पर कहा जा सकता है कि आकाश चिर निर्मल विस्तृत नीले पर्दे के समान दिखाई दे रहा है। यह विशाल परदा हरी-भरी धरती पर झुका हुआ नजर आता है।

उत्तर 3. धरती रोमांचित-सी इसलिए लग रही है क्योंकि गेहूँ और जौ में बालियाँ आ गई हैं। गेहूँ जौ की बालियों में दानों पर लगे नुकीले भाग को देखकर लगता है कि ये धरती के रोम हैं जिनसे उसका रोमांच प्रकट हो रहा है।

उत्तर 4. सरसों के फूलने से वातावरण में तेल की गंध भर गई है जो हवा के साथ उडती फिर रही है। इस पीली-पीली फूली सरसों को अलसी की कली हरी-भरी धरती से झाँक-झॉक कर देख रही है।

उत्तर 5. तितलियों के उड़ने से वातावरण अत्यंत सुंदर बन गया है। पेड़-पौधे एवं फसलों पर रंग-बिरंगे सुंदर फूल खिले हैं। ये फूल हवा के साथ झूम रहे हैं और तितलियाँ उड़ती-फिरती एक फूल से दूसरे फूल पर आ जा रही हैं।

उत्तर 6. कच्चे हरे दिखाई देने वाले अमरूद अब पककर पीले हो गए हैं और उन पर लाल-लाल चित्तियाँ पड़ गई हैं। बेर के फल अब पककर सुनहरे और मीठे हो गए हैं। आँवले की डालियाँ अब छोटे-छोटे आँवलों से जड़ी हुई दिखाई दे रही हैं। इस कारण ये फल और पेड़ कवि का मेन लुभा रहे हैं।

काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न

उत्तर 1. ग्राम श्री कविता में प्राकृति का सतत परिवर्तनशील होना दर्शाया गया है। जिस तरह से वसंत आने पर पीपल और ढाक के पेड़ झड़ने लगते हैं, आम के पेड़ों पर सोने और चाँदी के रंग के बौर जाते हैं। इससे सारी डालियाँ मंजरियों-सी जड़ी हुई प्रतीत होने लगती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि प्रकृति परिवर्तनशील है।

उत्तर 2. 'ग्राम श्री' कविता में आम, अमरूद, आँवला आदि ऐसे अनेक पेड़ों का उल्लेख है जो वातावरण की सुंदरता बढ़ा रहे हैं तो कुछ पेड़ ऐसे भी हैं जो वातावरण को सुगंधित बना रहे हैं। ऐसे पेड़ों में कटहल, जामुन, आडू, नींबू, अनार आदि प्रमुख हैं।

उत्तर 3. तिनकों पर ओस की बूंदों को देखकर कवि ने हरे रक्त की नवीन कल्पना की है क्योंकि तिनकों पर पड़ी ओस की बूंदें हवा से हिल-डुल रही हैं। इससे बूंदें तिनकों के हरे रक्त-सी प्रतीत हो रही हैं।

उत्तर 4. मरकत को पन्ना भी कहा जाता है। ये पन्ना हरे रंग का होता है। उसके डिब्बे को खोलने पर हरा प्रकाश फैल जाता है। इस श्मरकत डिब्बे जैसे गाँव के ऊपर नीला आकाश छाया हुआ है। अनुपमेय शोभा युक्त गाँव की यह स्निग्ध छटा (दृश्य) इस वासंती मौसम में अपनी शोभा से लोगों का मन हर लेने वाली है।

उत्तर 5. खेतों में मटर की फसल खड़ी है। उस पर रंग-बिरंगे फूल और फलियाँ आ चुकी हैं। इन फूलों को देखकर लगता है कि मटर सखियों के संग हँस रही है। वह अपनी मखमली पेटियों जैसे छीमियों में बीजों की लड़ी छिपा रखी है।

उत्तर 6. गाँव में पेड़-पौधे एवं फसलों के कारण चारों ओर हरियाली फैली है। सरदियों की गुलाबी धूप पाकर यह हरियाली खिल उठती है। ऐसा लगता है कि जैसे धूप और हरियाली सुख से सोए हुए हैं। ओस भरी शांत रातों में तारों को देखकर लगता है कि वे जैसे सपनों में खोए हुए हैं। कवि ने गाँव की अनूठी सुंदरता से जन-जन को आकर्षित किया है।

अध्याय-12

मेघ आए

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

पद्यांश – 1

उत्तर (i) मेघ के आने की खबर पाकर पेड़ झुककर, गर्दन उचकाए मेघों को देखने लग जाते हैं।

उत्तर (ii) धूल युवती का प्रतीक है।

वह मेहमान के आगे-आगे चल रही है। उसे देखकर मानो ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह मेहमान को मार्ग दिखाते हुए जा रही है।

उत्तर (iii) शहरी पाहुन के आने पर गाँव में उल्लास का वातावरण हो जाता है।

पद्यांश - 2

उत्तर (i) बूढ़े पीपल अर्थात घर के मुखिया ने आगे बढ़कर मेहमान का झुककर स्वागत किया।

उत्तर (ii) लता विरहिणी युवती का प्रतीक है।

मेघ एक वर्ष बाद सुध लेने आएँ हैं, इसलिए उसने मेघ से शिकायत की।

उत्तर (iii) ताल ने भारतीय संस्कृति का निर्वाह अतिथियों के चरण पखार कर किया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. बूढ़ा पीपल घर के मुखिया का प्रतीक है।

उत्तर 2. बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर झुककर मेहमान का स्वागत किया।

उत्तर 4. मेघ गाँव में चारों ओर उल्लास के वातावरण की ओर संकेत करते है।

उत्तर 5. बूढ़े पीपल ने।

उत्तर 6. मेहमान के चरण पखारने के लिए युवक परात में पानी भरकर लाया।

उत्तर 7. क्षितिज को।

उत्तर 8. नदी को।

उत्तर 9. लता रूपी युवती ने

मेघ रूपी पाहुन को।

उत्तर 10. ढर-ढर मिलन के अश्रु ढरके।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. 'मेघ आए' कविता में भारतीय संस्कृति का वर्णन किया गया है। हमारी संस्कृति 'अतिथि देवोभव:' संस्कृति का निर्वहन करती है। हम भारतीय अतिथियों के चरण पखारते हैं और हृद्य से उनका सम्मान करते हैं।

उत्तर 2. प्रस्तुत कविता में बादलों को शहरी पाहुन अर्थात दामाद के समान बताया है। जिस प्रकार बादलों के आकाश में आते ही वातावरण में अनेक परिवर्तन हो जाते हैं, ठीक उसी प्रकार शहरी दामाद के गाँव में आते ही उल्लास छा जाता है।

उत्तर 3. लता रूपी नायिका ने मेघ रूपी मेहमान को उलाहना दिया कि क्या उसे एक वर्ष बाद उसकी याद आई है।

उत्तर 4.
i) हवा आगे-आगे चलने लगी।
ii) पेड़ गरदन उचककर देखने लगे।
iii) आँधी चलने लगी।
iv) नदी छिठककर, घूँघट सरकाकर मेघों को देखने लगी।

उत्तर 5. 'ताल'-युवक का प्रतीक है। वह मेहमानों के आदर और सम्मान हेतु पारात में पानी भरकर लाते हुए अतितिथियों के चरण पखारता है और 'अतिथि देवो भव:' संस्कृति का निर्वाह करता है।

उत्तर 6. नायिका ने व्यग्रता से अपने पति को उलाहना दिया। उसकी आँखों से आँसू झरने लगे।

उत्तर 7. नदी युवती का प्रतीक है।

वह घूँघट सरकाकर आकाश में छाए मेघों की ओर देख रही हैं।

उत्तर 8. लता ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओर से देखा क्योंकि ग्रामीण संस्कृति में अतिथियों से पर्दे में रहकर बात की जाती है।

उत्तर 9. मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में निम्नलिखित परिवर्तन हुए-
i) वातावरण अत्यंत सजीव हो उठा।
ii) ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी।
iii) तालाब पानी से भर गया।
iv) पेड़ झूमने लगे।

काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न

उत्तर 1. जब आकाश में बादल छा जाते हैं तो सबके मन प्रसन्न हो जाते हैं। बादलों के आने से पूरा वातावरण खुशनुमा हो जाता है। ठीक उसी प्रकार जब शहरी दामाद गाँव में आ जाता है तो उल्लास का वातावरण बन जाता है। सभी मेहमान की आवभगत में लग जाते हैं।

उत्तर 2. भारतीय संस्कृति में अतिथियों के चरण पखारे जाते हैं। घर के मुखिया द्वारा उनका अभिवादन किया जाता है। पूरा घर अतिथियों की आवभगत में लग जाता है।

उत्तर 3. शहरी मेहमान जब गाँव में आता है तो संपूर्ण वातावरण में अत्यंत उल्लास होता है। उनका हैसियत से बढ़कर स्वागत किया जाता है। पूरा परिवार मेहमान के आदर-सत्कार में लग जाता है।

उत्तर 4. विद्यार्थी स्वयं करें।

उत्तर 5. वर्तमान समय में परंपराओं में बहुत परिवर्तन आ गया है। आज मनुष्य के पास इतना समय नहीं है कि कहीं जाकर रहे। आज दामादों के व्यवहार में भी परिवर्तन आया है। वे स्वयं को घर का बेटा मानते हैं और इन औपचारिकताओं में विश्वास नहीं रखते।

अध्याय-13

बच्चे काम पर जा रहे हैं

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

पद्यांश – 1

उत्तर (i) बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं। यदि उनका सर्वांगीण विकास नहीं होगा तो वे देश की प्रगति में योगदान नहीं दे पाएँगे। कवि बच्चों के अंधकारमय भविष्य के विषय में सोच कर चिंतित हैं।

उत्तर (ii) प्रस्तुत पंक्ति समाज की संकीर्ण मानसिकता और स्वार्थ की वृत्ति की ओर संकेत करती है। स्वार्थी लोगों को यह स्थिति भयावह नहीं लगती और वे उसे सामान्य बात समझते हैं।

उत्तर (iii) क्योंकि प्रश्न हमें सोचने पर विवश करता है और हम उसका हल खोजने का प्रयास करते हैं।

पद्यांश - 2

उत्तर (i) कवि की दृष्टि में सबसे भयावह स्थिति छोटे बच्चों का काम पर जाना है, जबकि यह उम्र उनकी मस्ती करने की है, खेलने-कूदने की है, पढ़ने की है।

उत्तर (ii) कवि का कहना है कि बच्चों की सुख-सुविधाओं की सभी वस्तुएँ होते हुए भी वे इनसे वंचित हैं। इसलिए इससे अधिक भयावह तो कुछ और हो ही नहीं सकता।

उत्तर (iii) दुनिया की हजारों सड़कों के माध्यम से कवि यह बताना चाहता है कि बालश्रम की समस्या किसी देश की ना होकर पूरे विश्व की समस्या है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. काले पहाड़ उन भ्रव्यचारियों के प्रतीक है जिन्होंने बच्चों की सुख-सुविधाओं को हड़प लिया है।

उत्तर 2. कोहरे से ढकी सड़क पर चिल-चिलाती ठंडी सुबह में छोटे-छोटे बच्चे काम पर जा रहे हैं।

उत्तर 3. बच्चे काम पर जा रहे हैं।

उत्तर 4. भयानक पंक्ति को विवरण की तरह लिखा जाना भयानक है।

उत्तर 5. छोटे-छोटे बच्चे कोहरे से ढँकी सड़क पर सुबह-सुबह काम पर जा रहे हैं।

उत्तर 6. कोहरे से ढकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं—सुबह-सुबह।

उत्तर 7. कवि खेल तथा खेल-सामग्री की ओर संकेत कर रहा है।

उत्तर 8. कवि आक्रोश प्रकट कर रहा है कि सब होते हुए भी बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

उत्तर 1. बच्चों का काम पर जाना चिंता का विषय इसलिए बन गया है क्योंकि बच्चे ही किसी भी समाज के भावी कर्णधार होते हैं। यदि बच्चों का स्वयं का विकास नहीं होगा तो वे देश का विकास करने में असमर्थ होंगे।

उत्तर 2. कवि के मन में निम्नलिखित प्रश्न उठते हैं–

i) क्या सारी गेंदें अंतरिक्ष में गिर गई हैं?

ii) क्या किताबों को दीमक ने खा लिया है?

iii) क्या किसी भूकंप के कारण सभी विद्यालयों की इमारतें ढह गई हैं?

उत्तर 3. बालश्रम की समस्या बढ़ाने में समाज की संवेदनहीनता का भी योगदान है। आज का मनुष्य संवेदना-शून्य हो गया है। वह केवल और केवल अपने विषय में सोचता है। छोटे-छोटे बच्चों को काम करते देख उसका हृदय नहीं पसीजता।

उत्तर 4. कवि कहना चाहता है कि जिस उम्र में बच्चों को अपना बचपन जीना चाहिए, बेपरवाह होना चाहिए, खेलना-कूदना चाहिए–उस उम्र में उन्हें अपने तथा अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए काम पर जाना पड़ता है।

उत्तर 5. कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि यह किसी एक देश की समस्या नहीं है बल्कि यह विश्वव्यापी समस्या है। बाल-श्रम की समस्या दीमक की तरह हमारी जड़ों को खोखला कर रही है।

उत्तर 6. विद्यार्थी स्वयं करें।

उत्तर 7. हादसा एक प्रकार की दुर्घटना है, जिससे हमें नुकसान होता हो। बच्चों का काम पर जाना धरती पर बहुत बड़ा हादसा है क्योंकि इससे बच्चों का विकास नहीं हो पाता। अविकसित बच्चे देश के विकास में कभी भी सहायक नहीं हो सकते।

काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न

उत्तर 1. चौदह वर्ष से कम आयु के बच्चों को किसी कारखाने या खान अथवा किसी और कार्य में नियोजित करना बालश्रम है। इसे रोकने के उपाय–

i) सरकार द्वारा अनेक नीतियाँ बनाकर।

ii) बच्चों की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी करके।

iii) जागरूकता अभियान चलाकर।

iv) समाज से वर्ग-भेद मिटाकर।

उत्तर 2. कवि की दृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में इसलिए पूछा जाना चाहिए ताकि हम प्रश्न पर बार-बार विचार कर, उस प्रश्न का हल ढूँढ़ सकें अर्थात समस्या का समाधान कर सकें। समाज से इस समस्या का समूल समाप्त कर सकें।

उत्तर 3. बच्चों को काम पर इसलिए नहीं भेजना चाहिए क्योंकि यह उनके पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने के दिन होते हैं। इसी उम्र में बच्चे संस्कार ग्रहण करते हैं। उन्हें पढ़ने-लिखने तथा विकास करने के पूर्ण अवसर मिलने चाहिए ताकि वे देश के अच्छे नागरिक बन सकें।

उत्तर 4. इसके अनेक कारण हो सकते हैं–

i) अज्ञानता

ii) निरक्षता

iii) गरीबी

iv) वर्ग असमानता

उत्तर 5. विद्यार्थी स्वयं करें।

उत्तर 6. विद्यार्थी स्वयं करें।

कृतिका : भाग 1

अध्याय-1

इस जल प्रलय में

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

उत्तर 1. कॉफी हाउस के पास पहुँचने पर लेखक ने देखा कि कॉफी हाउस बंद कर दिया गया था। सड़क के एक किनारे पर एक मोटी डोरी के आकारवाला गेरुए-झाग फेन में उलझा पानी तेजी से सरकता आ रहा है। लेखक को यह पानी 'मृत्यु के तरल दूत' जैसा लगा जिसे देखकर वह आतंकित हो गया।

उत्तर 2. लेखक ने अपनी यादों पर पड़ने वाले उस परदे को 'गैरिक आवरण' कहा है जिसके कारण गांधी मैदान से जुड़ी उसकी स्मृतियाँ धूमिल होती जा रही हैं। यह आवरण इसलिए आच्छादित करता आ रहा था क्योंकि गांधी मैदान की हरियाली पर धीरे-धीरे पानी भरता जा रहा था।

उत्तर 3. पटना को बाढ़ग्रस्त देखकर अधेड़ मुस्टंड ने टिप्पणी करते हुए कहा, "ईह। जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए अब बुझे!" उसकी ऐसी टिप्पणी इस अवसर पर तनिक भी उपयुक्त नहीं थी क्योंकि उसकी ऐसी टिप्पणी जले पर नमक छिड़कने जैसी थी। इस कथन में उसकी संवेदनहीनता झलक रही थी।

उत्तर 4. शाम साढ़े सात बजे आकाशवाणी के पटना केंद्र से प्रसारित स्थानीय समाचार सुनकर लेखक का दिल दहल गया। जिसमें कहा गया कि 'पानी हमारे स्टूडियो की सीढ़ियों तक पहुँच चुका है और किसी भी क्षण स्टूडियो में प्रवेश कर सकता है।

उत्तर 5. लेखक और उसका मित्र बाढ़ की अनहोनी से आतंकित थे। लेकिन वहीं पान की दुकान पर खड़े अन्य लोग आम दिनों की तरह ही हँस-बोल रहे थे। लेखक को इन लोगों की बात बिलकुल नहीं भाई और वह खुद को अहसज महसूस करने लगा। इसलिए उसने वहाँ से हट जाने का निर्णय लिया।

उत्तर 6. बाढ़ पीड़ितों से विभिन्न रूपों से जुड़े होने के बावजूद लेखक ने बाढ़ को करीब से नहीं देखा था। 1967 में पटना में जो बाढ़ आई थी, लेखक उसका भुक्तभोगी रहा है। उसने बाढ़ के पानी का भयावह रूप देखा ही नहीं, बल्कि उसकी पीड़ा को सहा है। इस तरह पटना में आई बाढ़ का अनुभव पिछले अनुभवों से बिलकुल भिन्न हैं।

उत्तर 7. नवयुवक और कुत्ते को देखकर हमें जीव-जंतुओं से प्रेम करने, एक दूसरे के सुख-दुख में काम आने जैसे जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है। जब लेखक और उसके साथी महानंदा से घिरी बाढ़ में लोगों को राहत सामग्री बाँटने गए थे। नाव पर एक डॉक्टर साहब भी थे। एक बीमार नौजवान कैंप में जाने के लिए जब नाव पर चढ़ने लगा तो उसके साथ उसका कुत्ता भी नाव पर चढ़ आया। डॉक्टर जब कुत्ते को उतारने के लिए कहने लगे तो नौजवान नाव से कूद गया। यह देखकर उसका कुत्ता भी नाव से कूद गया।

उत्तर 8. बाढ़ में फँसे लोग मछली और चूहों को झुलसाकर खाते हुए किसी तरह दिन बिता रहे थे। वहाँ पहुँचकर लेखक ने देखा की वहाँ तो बलवाही नाच हो रहा था। यहाँ धानी का अभिनय करता 'नटुआ' और दूसरे व्यक्ति ने अपने अभिनय से ऐसा दृश्य बना रखा है। जिसे देखकर कीचड़-पानी में लथपथ भूखे-प्यासे नर-नारियों के झुंड खिलखिलाकर हँस रहे हैं। उनकी ऐसी उन्मुक्त खिल-खिलाहट देखकर लेखक राहत सामग्री बाँटना भूल गया।

उत्तर 9. इस जल प्रलय में बलवाही नाच और नटुआ जैसे लोकनृत्यों का वर्णन किया गया है। प्रत्येक लोकसमूह की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है, जिसे लोकसंस्कृति कहा जाता है। लोक संस्कृति की सहजता, सरलता और ग्राह्यता महत्वपूर्ण विशेषताएं है। इसमे न तो बनावटीपन और न ही दिखावा होता है।

उत्तर 10. बाढ़ आने पर निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए-

i) सूचना के लिए रेडियो सुनना या टेलीविजन देखना चाहिए।

ii) कमजोर इमारतों से निकलकर किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाना चाहिए।

iii) बाढ़ के दौरान पेड़ों पर चढ़ना खतरनाक साबित हो सकता है। घर की छतों का उपयोग बाढ़ के दौरान उपयुक्त हो सकता है।

उत्तर 11. मनुष्य और जानवर के बीच आत्मीय और भावनात्मक रिश्ता हर प्रकार से उचित होता है। 'इस जल प्रलय' पाठ में कुत्ते और उसके मालिक की एक घटना का वर्णन किया गया है। मालिक कैंप में जाने के लिए नाव में बैठता है तो उसके साथ उसका कुत्ता भी नाव में चढ़ जाता है। और जब वह नाव से उतरता है तो उसके साथ उसका कुत्ता भी नाव से उतर जाता है।

उत्तर 12. गांधी मैदान पहुँचकर लेखक ने देखा कि इस मैदान की रेलिंग के सहारे इतने लोग खड़े थे कि उनकी संख्या दशहरा के दिन रामलीला के 'राम' के रथ की प्रतीक्षा करते लोगों से अधिक ही रही होगी। लेखक इस मैदान से जुड़ी कई यादें भूलती जा रही थी जिसमें आनंद-उत्सव, सभासम्मेलन और खेलकूद की यादें शामिल थी।

उत्तर 13. गुरुजी ने लेखक को बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में द्वीप जैसे बालूचर पर जाने से इसलिए रोका क्योंकि ऐसी जगहों पर चींटे-चींटी, साँप-बिच्छू, लोमड़ी, सियार आदि जानवर पनाह लेने के लिए पहले ही पहुँच चुके होते हैं।

अध्याय-2

मेरे संग की औरतें

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

उत्तर 1. लेखिका की माँ बड़ी नाजुक सी थी। वह घर का कोई भी काम नहीं कर पाती थी। उनके व्यक्तित्व से सभी प्रभावित थे। ससुराल में उन्हें बहुत सम्मान मिलता था। सभी उन्हें बहुत प्यार करते थे।

उत्तर 2. लेखिका की नानी की आज़ादी के आंदोलन में कोई प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं थी। परंतु वह आज़ादी और आज़ादी के दीवानों के प्रति विशेष जुनून रखती थीं। अपने जीवन के अंतिम दिनों में अपने पति के मित्र प्यारेलाल शर्मा से मिलकर अपनी बेटी को शादी आज़ादी के एक सिपाही से करवाने का वादा लिया।

उत्तर 3. लेखिका की दादी के घर का माहौल बहुत अच्छा था। सभी को आज़ादी थी कि वे अपनी इच्छा से कुछ भी कर सकते थे। लड़के-लड़की में कोई भेद नहीं था। घर के मर्दों द्वारा बच्चों की देखभाल की जाती थी।

उत्तर 4. विद्यार्थी स्वयं करें।

उत्तर 5. i) उनके व्यवहार से हमें सीख मिलती है कि डराने, धमकाने की बजाय प्यार से समझा-बुझाकर किसी को भी गलत रास्ते से सही राह पर लाया जा सकता हैं।

ii) जीवन में उतनी वस्तुओं का संचय करना चाहिए, जितनी आवश्यक हों।

उत्तर 6. चोर अनजाने में परदादी के कमरे में घुस गया और गलती से उन्हें जवाब देकर कुएँ पर पानी भरने के लिए चला गया, जहाँ पर वह पकड़ा गया।

उत्तर 7. लेखिका अपनी नानी से इसलिए प्रभावित थीं कि वह अपनी जिंदगी में अपने पति के विलायती रीति-रिवाज़ से कभी भी प्रभावित नहीं हुई थी। उनके मन में आज़ादी के दीवानों के प्रति विशेष जुनून था।

उत्तर 8. यदि परदादी चोर को डराती धमकाती या उपदेश देती अथवा पुलिस के हवाले कर देती तो उसे कभी भी सही राह पर नहीं लाया जा सकता था। परंतु उन्होंने अपने प्यार से उस चोर को वश में कर लिया। उसे अपने लोटे से पानी पिलाकर अपना बेटा बना लिया और उसे सही राह पर ले आई।

उत्तर 9. लेखिका ने कर्नाटक के कस्बे बागलकोट में एक प्राइमरी स्कूल खोला, जिसमें उन्होंने बच्चों को हिंदी, अंग्रेज़ी और कन्नड़ भाषाएँ सिखाई और अपने स्कूल को कर्नाटक सरकार से मान्यता भी दिलवाई।

उत्तर 10. लेखिका और उनकी सभी बहने लीक से हटकर चलने वाली तथा धुन की पक्की थीं। उनके व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि वे किसी का भी अंधानुकरण नहीं करती थीं। वे अपनी सोच पर किसी को हावी नहीं होने देती थीं। वे सब अपना मार्ग स्वयं बनाती थीं।

अध्याय-3

रीढ़ की हड्डी

पाठ पर आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न

उत्तर 1. शंकर के व्यक्तित्व में निम्नलिखित कमियाँ थी-

i) शंकर सुदृढ़ चरित्र का युवा नहीं था।

ii) वह स्वयं निर्णय लेने में सक्षम नहीं था। सबकी हाँ में हाँ मिलाता था।

iii) वह दब्बू किस्म का युवा था।

iv) अपने लक्ष्य के प्रति सजग नहीं था।

उत्तर 2. ऐसा करना समाज की खोखली मानसिकता की ओर संकेत करता है जिसमें दिखावे की प्रवृत्ति की प्रधानता है। लड़की वाले मजबूरी वश लड़के वालों के सामने ऐसा करते हैं। वे स्वयं को उनकी तुलना में कमतर समझते हैं।

उत्तर 3. महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु निम्न प्रयास किए जा सकते हैं-

i) उन्हें आत्मरक्षा के लिए प्रेरित करके।

ii) सरकार द्वारा अनेक नीतियाँ बनवाकर।

iii) उन्हें अपने अधिकारियों के प्रति जागरूक करके।

iv) उन्हें शिक्षित करके।

उत्तर 4. प्रेमा उमा को ज्यादा पढ़ाना-लिखाना नहीं चाहती थी जबकि रामस्वरूप के विचार इस विषय में अत्यंत उच्च थे। उन्होंने अपनी बेटी को बी.ए. तक की पढ़ाई करवाई थी।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि रामस्वरूप के विचार उचित थे। क्योंकि शिक्षा अर्थात विद्या हमारी सच्ची साथी होती है।

उत्तर 5. संकीर्ण मानसिकता वाले गोपाल प्रसाद का मानना था कि ज़्यादा पढ़ी-लिखी युवतियाँ घर गृहस्थी अच्छे से नहीं सँभाल पाती और नखरे भी बहुत दिखाती हैं। इसलिए वह चाहते थे कि उनकी बहू ज़्यादा से ज़्यादा दसवीं पास हो।

उत्तर 6. यह एकांकी अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल रही है। शरीर को सीधा रखने के लिए रीढ़ की हड्डी का बहुत महत्व होता है। ठीक उसी, प्रकार समाज में स्वाभिमान से जीने के लिए सुदृढ़ चरित्र का होना अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य का चरित्र ही उसकी रीढ़ की हड्डी होता है।

उत्तर 7. दोनों को समान रूप से अपराधी माना जा सकता है। रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलाना उनकी विवशता थी क्योंकि संकीर्ण मानसिकता वाले लोग ज़्यादा पढ़ी-लिखी लड़की को अपनी बहू नहीं बनाना चाहते थे।

उत्तर 8. समाज को उमा जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है, जो समाज में फल-फूल रही, सड़ी गली परंपराओं का विरोध करने की हिम्मत रखता हो। ऐसे लोग गलत कार्यों का विरोध करके समाज का उचित दिशा प्रदान कर सकते हैं।

उत्तर 9. प्रस्तुत एकांकी के आधार पर हम 'उमा' को मुख्य पात्र मानते हैं क्योंकि वह चरित्र की धनी थी तथा सुदृढ़ विचारों की प्रतीक थी।

उत्तर 10. इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य स्त्रियों को उचित गरिमा दिलवाना है और उन्हें उनके अधिकारों से अवगत कराना है। साथ ही उन्हें जागरूक करना है कि वे अपना शोषण न होने दें।

उत्तर 11. विद्यार्थी स्वयं करें।